मूल्य रु. ५-००
Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २०१ • अप्रैल -२०२४
Volume no. 18 Issue No.201 April 2024

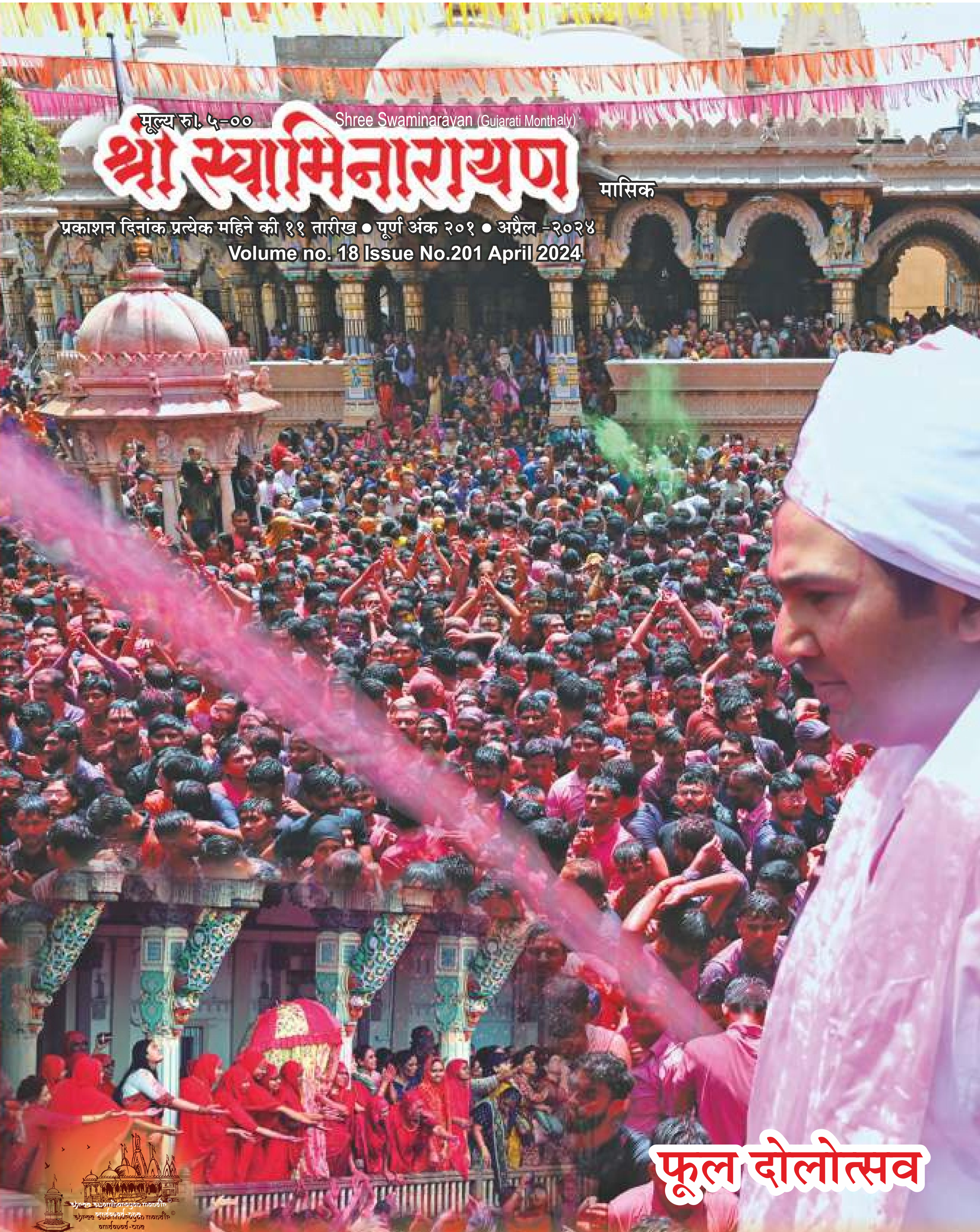

फूल दोलोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव के समक्ष डायफ्रूट का अन्नकूट-घेवर के अन्नकूट की आरती उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री तथा अंगूर का अन्नकूट की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

राणीप मंदिर के २५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की पूजा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में आर्शीवचन पाते हरिभक्त ।

मोटेरा मंदिर के ३४ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

पाटडी बहनो के मंदिर के रजत जयंती के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

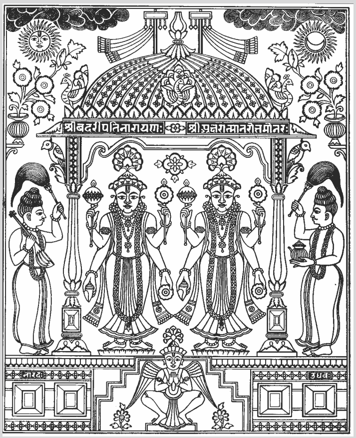

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स :
२७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ • अंक : २०१ • अप्रैल-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	एकादशी में धान्य	०६
०४.	आशीर्वचन मूलीधाम वसंत पंचमी	०७
०५.	आशीर्वचन श्री नरनारायणदेव के २०२ वे पाटोत्सव	१०
०६.	परब्रह्म भी आश्चर्य चकित होते होगे	१३
०७.	भगवान के तीन गूढ संकल्प : देव, आचार्य, शास्त्र	१९
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२०
०९.	भक्ति सुधा	२१
१०.	सत्संग समाचार	२५

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० • प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

प्यारे हरिभक्तो, हम सभी ने श्री नरनारायणदेव का २०२ वाँ पाटोत्सव मनाया है। फाल्गुन सुद-३ जाकर पूनम आया। फूल दोलोत्सव ऐसा मनाया गया न भूतो न भविष्यति। इसके बाद चैत्र मास पूर्णिमा को हनुमान जयंती मनायेगे।

शांतचित्त भाव से जीवन देखने योग्य है। हम सभी भगवान को पहचानते है। हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। वह विचार करना है। महाराज के आज्ञा का पालन करना हमारे जीवन का ध्येय होना चाहिए। भगवान के साथ तदात्म बनाना चाहिए। जीवन का अंत कब हो जाये। यह निश्चित नही है। यह जीवन जल के बुलबुले के समान है। वह कब फूट जाये बताया नही जा सकता है। भगवान की कृपा से मानव शरीर मिला है। तो भगवान का भजन करे। भगवान की भक्ति किसे कहते है ? भगवान के प्रति अति स्नेह यही भक्ति कही जाती है। स्नेह रखने पर आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है। महाराजने बताया है कि भक्ति कैसे करे। हमे उसे याद रखना है। भगवान की आज्ञा क्या है ? इसे महाराज लिखित में दिया है। शिक्षापत्री ! इसके २१२ श्लोको में आज्ञा बाकी नही है। इसका पालन करने से लोक-परलोक मे सुखी होने का सरल मार्ग बताये है।

गृहस्थ आश्रम वाले को अपना व्यापार उधम करने वाले में धन-धान्य आदि प्राप्त करना। उसका दशांश भाग अलग करके भगवान को अर्पण करे। श्रीजी महाराज शिक्षापत्री में श्लोक नं. १४७ में स्पष्ट आज्ञा किये है। गृहस्थ आश्रमी सत्संगी वह अपने व्यापार-उद्यम में से दशांश भाग श्री कृष्ण भगवान को अर्पण करे। जो व्यवहार में दुर्बल हो वह २० वाँ भाग अर्पण करे। हमे इस आदेश का अक्षरसह पालन करना हमारा कर्त्वर्य है। हमारे आमदनी में देव का अंश होता है। इतना अवश्य याद रखना चाहिए।

इस धर्मादा के भाग में कोई प्रसंग, समैया समावेश नही है। इसका ध्यान रखे। अन्य दान वाले अंश को इस दशांश में समावेश नही करना है। इस पर ध्यान रखे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

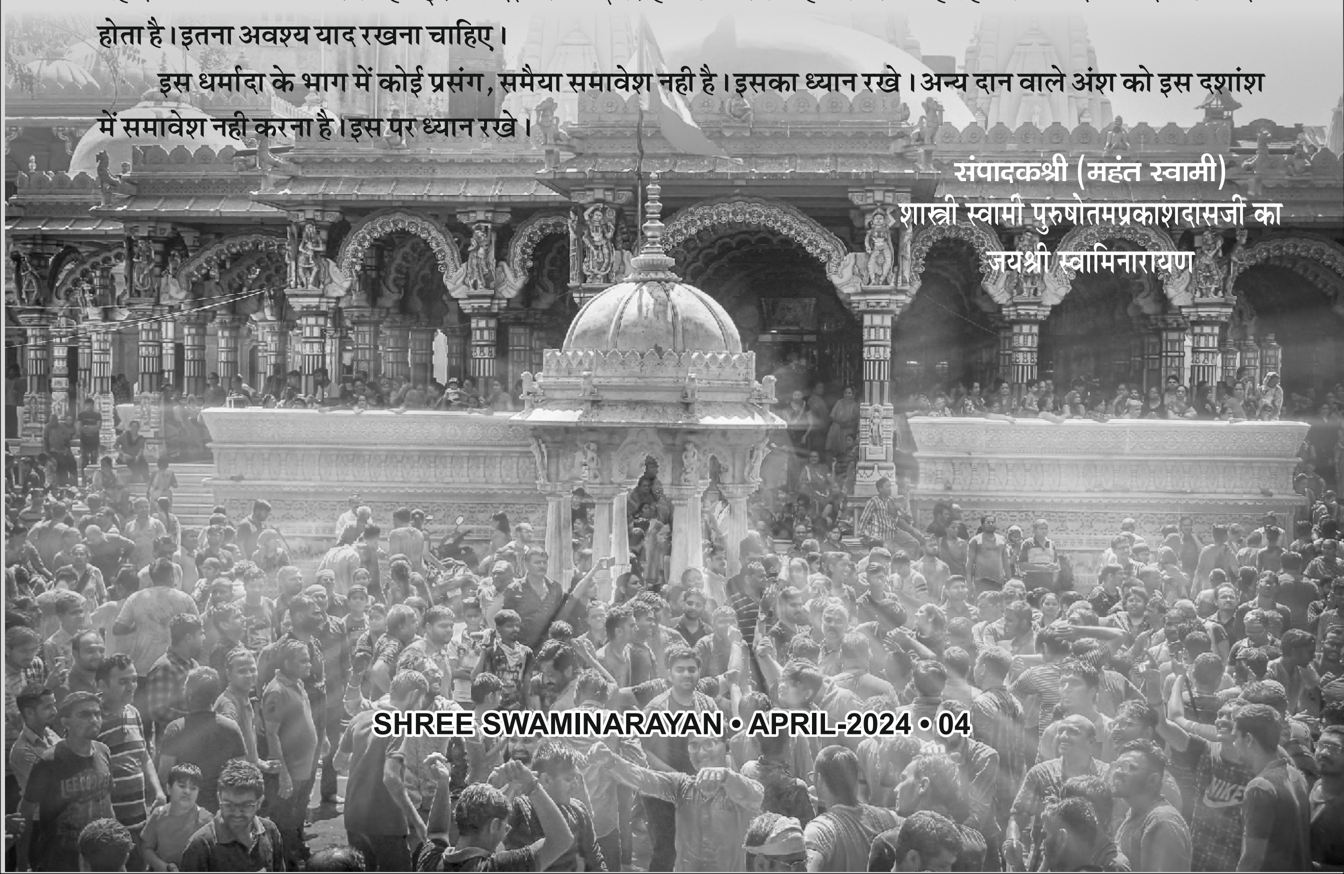

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०२४)

२ भाउपुरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा कथा के अवसर पर पधारना, वहाँ से प्रतापपुरा गाँव में पधारना, वहाँ से विहार मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

५ बाकरोल गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिरना पाटोत्सव पर पधारना।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्रसादी मंदिर) प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री प्रस्थापित श्री वीर हनुमानजी महाराज के सानिध्य में आयोजित सुंदरकांड के अवसर पर पधारना।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१२ अहमदाबाद मंदिर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का २०२ वाँ पाटोत्सव - महाभिषेक, अन्नकूट आरती अपने करकमलो द्वारा किये थे। संत महादीक्षा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१५ मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर ३४ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड दशाब्दी पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप (बहेनोका) रजत जयंती पाटोत्सव और भाईयो का मंदिरना ३९ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२२ से २८ (I.S.S.O.) नूतन श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर सिनसिनाटी (अमेरिका)ना खातमुहूर्त प्रसंगे पर पधारना, वहाँ से बोलींगग्रीन (अमेरिका) पधारना, वहाँ से कोलोनीया न्युजर्सी आपणा (I.S.S.O.)ना मंदिरो में पधारना।

३० हलवद बहेनो के नवीन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०२४)

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (भूंडीया) ६ ठ्वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना, श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल के पाटोत्सव अवसर पर पधारना।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्रसादी मंदिर) प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री प्रस्थापित श्री वीर हनुमानजी महाराज के सानिध्य मे आयोजीत सुंदरकांड प्रसंगे पधरामणी असारवा स्वा. वाडी.

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०२ वे पाटोत्सव - अभिषेक सव्यं के करकमलो द्वारा उल्लासपूर्वक पूर्ण किया गया था।

२५ पूर्णिमा की सत्संग सभा के अवसर पर पधारना, इशके पश्चात श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव रंगोत्सव अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी चौक में हजारो हरिभक्तो की उपस्थिति में उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

२६ से २ अप्रैल - सीडनी, मेलबोर्न (ओस्ट्रेलीया) में सत्संग के प्रचार के लिये संत-पार्षद मंडल के साथे पधारना।

एकादशी में धान्य

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

पुराणो में एक शक्ति के मेघा महर्षि की कथा आती है । कभी एक बार माता शक्ति क्रोधित होकर अति वेग में भयभीत होकर एक जंगल में महर्षि धानु तपस्या कर रहे थे । वहाँ पर शक्ति के विकराल तेज से धनु महर्षि की विशाल शरीर से टकराई । वहाँ पर एक ही क्षण में मह्रषि की शरीर भस्मीभूत हो गया । देवी शक्ति मेघानाम से तपस्वी महर्षि धानु के शरीर में लीन हो गयी । देवी मेघा के तेज से धानु महर्षि पृथ्वी में लीन हो गये । ऋषि-मुनियो के मतानुसार यह घटना एकादशी के दिन घटी है । उस दिन पृथ्वी के उपर हाहाकार मच गया था । प्रलयकारी आवाज, गगन भेदी ध्वनि से समस्त मनुष्य प्राणी भयभीत हो गये । धरती के धर्ता दिग्पाल, ग्रह, नक्षत्र को ज्ञात हुआ कि ये धरती माँ मेघा धानु की ज्वाला सहन नही कर सकती है । लगता था पृथ्वी रसातल में चली जायेगी । इस संकट के समय में ब्रह्मा भोलेनाथ महादेव की शरण में गये । वे दोनो वैकुंठाधिपति भगवान के पास गये । तथा पृथ्वी की वेदना कहे । उसी समय भगवान विष्णु के चरण की सदैव सेवा करने वाली सेविका महाशक्ति एकादशी के बारे में विष्णु भगावन ने कहा, देवी आप की तिथी एकादशी के पर्व पर भूमंडल पर हुए । प्रलयकारी विस्फोट की अग्नि को शातं करे । और् धरती के उपर निर्दोष जीवो को रक्षा करे । तभी त्रिदेव के सामने महाशक्ति देवी एकादशी बोली, देवी मेघा एवम् महर्षि धानु के विलय से हुए विनाश विकराल तेज धरती में लीन (क्षमा) गया है । धानु महर्षि का धर्ती के अंदर से (धान) अनाज के रुप में चावल जो गेहूँ आदि सत स्वरुप प्रगट हुए । वे हमारी तिथि एकादशी के दिन इस धरती पर मनुष्यो के जीवन का पोषक बनेगे । और एकादशी के (मेरी तिथि) के दिन यह घटना बनी है । इस दिन धान्य (अनाज) में पृथ्वी के सभी छोटे-बड़े पातकी उस दिन उसमें निवास करके रहेगे । अन्य तिथि को यह अनाज शरीर के पोषक बनेगे । तथा एकादशी के दिन पातक हो जाते है । देवी एकादशी के बचन से त्रिदेव सहमत हुए । और् बोले आप की बात सत्य हो ।

इसके पश्चात पृथ्वी के प्रलयकारी अग्नि धरती माता की मिट्टी में से सर्व प्रथम धान स्वरुप में पूर्वे में अनादि काल में जन्म हुआ तत्पश्चात जो रुप में इसी क्रमानुसार मूँग, अरहर, मसूर अन्य स्वरुप धरती के अंदर से प्रगट हुए । इसमें से सर्व प्रथम धान (चावल) और जो ये दोनो ऋषि-मुनियो के लिये यज्ञ तथा हवन में पूजन-आवाहन स्वीकार करने के लिये किया जाता है।

एकादशी व्रत कथा पुराणो में अनेक रुप में लिखा गया है । इसमें कई विषय चंद्र और मन के अनुसंधान में कहा गया है । कुछ बाते शरीर के स्थूल और सूक्ष्म स्वास्थ्य एवं सुख को केन्द्र में रखकर कहेग ये है । कई विषय तप-साधना की पूर्ति करने के कारण मनुष्य जाति के सर्वागीण सिद्धि के बारे में बताया गया है । निराहार, व्रत उपवास यह साधना की सिद्धि के लिये होती है । उपासन में सयम (यम-नियम) अष्टांग योग का प्रथम सोपान है।

एकादशी व्रत की अनंत कथा प्रचलित है । लेकिन प्रत्येक कथा के मूल में महाशक्ति और धानुमहर्षि की कथा ही है । एक बात तो निश्चति ही है कि हमारे प्राचीन व्रत और विज्ञान दोनो एक साथ ही थे । व्रत में विज्ञान और विज्ञान में व्रत छिपा है । इसका सार सम्पूर्ण जीव सृष्टि सहित मानव जीवन की धार्मिक आध्यात्मिक शारीरिक मानसिक सुख का अर्थ ही है । इसके पालन-रक्षण से वह सुखी तथा मनमानी करने से दुःखी बनते है । धानु ऋषि के तेज मे से जिस धान्य का जन्म हुआ । उसे हम आज चावल (धान) कहते है । गुजरात में डांगर कहते है । पृथ्वी पर निवास करने वाले एकादशी के दिन जो अन्न खाता है । तो उसमे व्याप्त पाप का भक्षण करता है । यह पुराणो

(पेईज नं. १४)

आशीर्वचन मूलीधाम वसंत पंचमी

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री, ता. १४-२-२०२४ आज के मंगल दिवस पर वसंत पंचमी मूली में ही हो और मूली के अलावा दूसरी जगह नही । यह बात आप को तथा हमे गाँठ बांधकर रख लेना है । यह बास्तविकता है । संसार को पता चले की मै वसंत पंचमी के दिन मूली के अलावा वसंत पंचमी को अपना जीवन कहा है । यह ब्रह्म वाक्य है ।

सर्व प्रथम मंगलाचरण मध्य में मंगलाचरण और अभी शास्त्री स्वामीने निजाश्रितानां.... के शिक्षापत्री और विदुरनीति की पूर्णाहुति की है । पूर्णाहुति कैसे की जाती है ? अंत मंगलाचरण में पूर्णाहुति ही नही है आज शास्त्री स्वामी ने अच्छा लाभ दिया है । उनके गुरु तो अधिक लाभ दिये थे । धन्य है जो परम्परा को बनाये रखे है । अभी राम स्वामी के साथ बात कर रहे थे । अंत के श्लोक में कहे है निज आश्रितानां थे हम सभी कहते है । बोले है समझता कौन है ? समझने की आवश्यकता क्या है ? समझने पर दुःख होता है । बुद्धिशाली होने पर भी कष्ट है । बैलन्स करने पर सुखी होगे । और बुद्धिशाली भी रहेगे । हमे कह देना ही चाहिए । निजाश्रीतानां सकलार्ति हन्ता सद्धर्म भक्तो खनं विधाता । दाता सुखानां मन सेप्सितानां तनोतु कृष्णो । खिलमंगलम्, नः ॥ निजाश्रीतानां अर्थात् भगवान के प्रति आश्रित होना । दुःख के हर्ता, सुख को देने वाले ये बड़े बड़े शब्द है । यदि हम माने तो । कभी बिस्तर पर सोकर – सोचना । किस दिन सुख मिला ? लड्डू खाये तो सुख मिला नही लड्डू खाने पर तो आलस आया । सुख क्या है ? महाराज बताये है । महासुख जिसके पीछे दुःख की परछाई भी नही है । २०४ वे श्लो कमें महाराजने सच्चास्त्राणां.... लिखे है । सच्छास्त का सार और अंत में निजाश्रीतानां अर्थात हमारे, स्वयं के, भगवान के आश्रित किसके आश्रित ? किसके दुःख का हरण ? ये चार शब्द हो इसमें मनुष्य भ्रम में आ जाता है । जो अपने अर्थात् भगवान के आश्रित है । वे जन्म–मृत्यु के चक्कर से दुर हो जाते है । तिविध ताप दूर जो जाता है । छोटे–बड़े दुःख आने वाले हो तो दूर हो जाते है । सभी कष्ट का नाश करने वाले का अंत आ गया है । कैसे है भगवान ? सुख देने वाले है ।

नारायणप्रसाद स्वामी कहते है । सर्व प्रथम गौशाला में जाना चाहिए । सर्व प्रथम हरिभक्त जहाँ पर रसोई की सेवा देते है । वहाँ पर जाना है । रामपरा का हो या टिंबा का हो । एक हरिभक्त कोने में भजिया तल रहा था । वह दूर से मुझे बुला रहा था । हाथ के इशारे से समीप आने के लिये कह रहा था ।) अब आप बोलो, ऐसा कौन कर सकता है । मन में हुआ कि यह अपने पन का अधिकार है ।इस लिये वहाँ पर हम गये । उसे भी विश्वास था कि हम वहाँ पर जायेगे। नही तो कोई ? मैं वहां कुर्सी पर बैठ गया । ८–१० अच्छी पकी भजीया उसने तल कर निकाला । कारण यह है । कि भगवान तथा भगवान के भक्त की सेवा करना है । यह बात महाराजने शास्त्र में जोर देकर कहरे है कि यह बात में नख से सिख तक मैं मानता हूँ । भगवान तथा भगवान के भक्तो का मान रखे । ८ से १० भजिया को खाये । इसका आशीर्वाद प्राप्त हो गा । यह सेवा अभिनंदन का पात्र है । इसके लिये शब्द नही है ।

ये भाई–बहन, हरिभक्त इस प्रकार रसोई बनाकर हम सभी को खिलाते है । वे भगवान तथा भगवान के भक्तो को खुश करते है । हमें तो उत्तम वर्ग का भोजन मिल जाता है। इसके पीछे किसका श्रम है । उस पर विचार कर स्वामीजी से कहे कि सर्वप्रथम रसोई घर अच्छा होना चाहिए । फर्श पर चिकना हट है । इसे स्वच्छ, कराये पूर्णिमा को हरिभक्त आते है । उनकी सुविधा सर्व प्रथम अच्छी बने । इससे सिंहासन पर बैठे राधाकृष्णदेव खुश होगे ।

सोना की सेवा, सोना तो आयेगा । चला भी जायेगा । सोना से भगवान की शोभा नही बढती है । आप के भाव का अनादर मैं नही कर रहा हूँ । यह मेरा अपना मत है । भगवान के पास सोना हो या पत्थर हो कुछ अन्तर नही पडता है । यदि कर्ता–हर्ता मानते है तो सब कुछ भगवान ही है । कोई भूखे नही जाना चाहिए । जिस दिन उसे भगवान के नाम का उच्चारण आयेगा । उसी दिन वसंत पंमची का उत्सव पूरा होगा ।

मुबई से, कच्छ से, राजस्थान से हरिभक्त आये है । मै अभी ५–६ मंदिरो में गया था । तीन जगह पर प्रतिष्ठा थी । एक

दिन मुंबई गये थे । वापस आये, मुनि स्वामीने कहा कि मूली प्रातः जायेगे । लेकिनमुझे ऐसा लगा कि पूरा झालावाड आयेगा । हम एक दिन पहले न जाये तो क्या लाभ है ? हम किस काम के है । इन हरिभक्तो को देखकर मनोबल बढता है । प्रेम श्रद्धा बढती है । गुण लेकर जाना चाहिए । भगवान ने इतना दिया है । जो हमारे पास योग्यता भी नही है । यही सब सुख है । कितनी भजन होती है । आप सभी भगवान को खुश करते है । कल शयन आरती में कितने हरिभक्त आये थे । स्वामी जी कह रहे थे ।अत्यंत भारी भीड थी । जिस में लोग दब सकते थे । यह घटना याद रह जाये ऐसी थी ।

मुझे कोई अभी कहा है कि अयोध्या में **Air Port** बन जाये तो छपैया जाने में सरलता हो जायेगी । मैने कहा ये अच्छी बात नही है । हाँ हाँ करते पहुंचे इसमें क्या आनंद मिलेगा ? इससे पहले अयोध्या से छपैया जाने पर आठ घंटे लगता था । मुझे याद है । गाँव के खेत के पगडंडी से जाना पडता था । बबूल चुभ जाते थे । दुःख होने पर यात्रा होती है । नही तो उसे पर्यटन कहते है । यह सिद्धान्त है । अपने जेब के खर्च से जाना । अब तो फोन कर देते है कि भोजन की व्यवस्था कर लेते है । यह भी किया जाता है । जेब खाली करने पर सब कुछ मिलता है । नाथद्वारा, कोटा, जयपुर या कानपुर जहाँ पर भी जाये । २०० कि.मी. की हद में रहने, ठहरने भोजनकी सुविधा उपलब्ध है । कोटा के महंतने अच्छा कार्य किये है । भगवान के भक्तो पर ध्यान देना हमारा काम है । और यह आवश्यक भी है ।

आज झालावाड कितना हरा-भरा है । लेकिन ध्यान दे कई निशाचार भी धुमते है । जो समझे वह अच्छे है । किसे समझ में नही आया वे आवश्यक हमसे मिले ।आप उन्हे बैठने देगे तो हम आप को प्रवेश नही देगे । इन लोगो को खोजकर समाचार दे दे । आप नही खोज पाये तो जगदीशभाई । जगदीशभाई सत्संग के आभूषण है । निशा अर्थात रात्री । यह तो दिन में धुमते है । रात्रि के समय घर में सेंध काटकर चोरी करने जाते है । देशी भाषा में खाद डालना कहते है । ये तो रात्रि मं चोरी तथा दिन में सेंध करते है । बचियेगा । मैं इस लिये कह रहा हूँ कि धन चुराले कोई बात नही लेकिन धन के साथ श्रद्धा चोरी होने पर पीढीयो तक हानि होगी । गाल पर थप्पड मारने पर धब्बा आता है । लेकिन श्रद्धा पर चोट करने से पता नही चलता है । दूसरा कुछ कर देगा तो पता भी नही चलेगा ।

एक हजार करोड बार बोला हूँ दो करोड बार कहुँगा देव का जो होगा । वही पर जायेगे । दूसरी जगह पर नही जायेगे । कितना महान हो । बडी दुनिया हो, देव का नही है तो किस काम का ? हम देव के है । देव का ही रहना है । इतना तो स्वाभिमान होना चाहिए। गर्व होने पर जीवन जीने का आनंद आता है ।

हम सभी भगवान के बच्चे है । भगवानने अपना ध्यान रखा है । सुखी बनाये है । आप भगवान के आश्रित है । दूसरे को भगवान का आश्रित बनाना है । दूसरा कुछ नही करना है ।

अभी बात आयी है । आचार्य की आज्ञा मे रहे । आश्रित बन कर रहे । आचार्यो की कौन सी आज्ञा है ? मुझे बताओ कोई एक तो खडा होकर बताये । यह भूत कहाँ से आया ? २१२ श्लोक महाराजने लिखा है । २१३ श्लोक हमने तो लिखा नही है । मैं भगवान का हूँ । आप भगवान के है । तो आचार्य आप के हुए । भगवानने आज्ञा किया है ।इस लिये यह पद है । इस पद की गरिमा है । संतो की गरिमा देव द्वारा ही है । हरिभक्तो की गरिमा देव द्वारा है । ये एक दूसरे के साथ संलग्न है । एक दूसरे की मर्यादा में रहना है। कोई आचार्य या संत २१३ वी आज्ञा करे तो छोडकर चल देना । यह साफ बता रहा हूँ ।इसमें अधिक समझने की आवश्यकता नही है ।

जो है उसका पालन ही नही हो पाता है ।और हम सभी अधिक पालन करने जाते है । एक की जगह पाँच गणना करते है । सुनने में विचार में चाल में दृष्टि में गणना आवश्यक है । स्वास्थ्य के लिये एक आज्ञा है । देव का जितना बनकर रहेगे । उतना स्वाभिमान आयेगा । यह सनातन सत्य है । यही परम्परा बच्चे बच्चियो में दे । यह एक बड़ी जिम्मेदारी है । ऐसे ही नही कह रहा हूँ । भाषण नही दे रहा हूँ । वास्तविकता बता रहा हूँ । देव का बन कर रहे । जब तक जीवित रहेगे । यह कहते रहेगे । जो भगवान का नही वह किसी का नही है । यह परम्परा है । संस्कार है । गरिमा और गौरव है ।

फोन आया । लोन वाला होगा । एक दिन एक भाई ने मुझे फोन किया । आप को लोन चाहिए मैने कहा आप को

चाहिए । हम सभी स्वामिनारायण भगवान के आश्रित है । कर्ज किस लिये ले भाई ? दो वक्त की रोटी भगवान दे रहे है । तीसरे वक्त की क्या आवश्यकता है । कर्ज उसे चाहिए जो बडी गाडी में धुमते है । हम को तो शांति है । आनंद भी है । यह फूल हार तो ठीक है । सच्चे हार तो आप लोग है । राधाकृष्णदेव के मुखारविंद के उपर मुस्कान है । यह आप लोगो के कारण है । यह वास्तविकता है ।

खाने के लिये भजिया है । बूँदी है । दो तीन प्रकार की सब्जी है । हरिप्रकाश स्वामी बता रहे थे । ग्यारह प्रकार का व्यंजन है । सब मत खाये । माप में खाये । अपच हो जायेगा । पचाने वाले के लिये अच्छा है । हम जैसे को दूसरे दिन डाक्टर के पास जाना पडेगा । बात यह है कि यह सब आप के लिये है । हरिभक्तो की व्यवस्था रखना जरुरी है ।

वृद्ध संत दुनिया देखकर बैठे है । युवक भी कई है । गुलाबपुरा से डांगरवा से उत्तर गुजरात से कई लोग आये है । ममता है इस लिये आये है । सेवा सभी करते है । गुलाबपुरा वाले वृद्द अमेरिका से आये है । अधिक सेवा दे रहे है । आप को ज्ञात नही होगा कि छपैया के नारायण सरोवर के चारो तरफ रोलिंग का सामान आप की फैक्टरी में कास्टिंग के लिये गया है । बिगबास कह नही रहे है । करोडो रुपया की सेवा है । तो भी मैने मजाक किया... कि एक करोड रुपया का चेक लाईये तो बोले कल ला देगे । मैने कहा मुझे नही चाहिए । ये भगवान के दरबार अलावा कही पर भी पैर नही रखते है । छाती ठोक कर कहते है । ये हमारे देव है । देव के लिये क्या नही कर सकते है । शास्त्र में नाम मिलता है । यहाँ पर साक्षात् बिराजमान है । ऐसे एक नही यहाँ पर कम से कम १५० लोग आये है । कहे तो गणना कर दे । धर्मादा देने वाले हो उसकी ही बात है ।

मूली यह मूल पूँजी है । इस लिये निशाचरो पर ध्यान देना है । वल्लभ स्वामी के गुरु प्रेमजीवन स्वामी मूली में, सुरेन्द्रनगर में कई अन्य गाँव में अधिक सेवा दिये है । जय स्वामिनारायण खाये की नही इतनी सी बात है । खिलाना और कम बात करना । महाराजजी का धाम है । आश्रय मे बैठे है । हम सभी भी इसी आश्रय में बैठे है । इसमें से गुण लेना चाहिए । यही उनके लिये श्रध्धांजलि है । इनके शिष्य वल्लभ स्वामी भी ऐसे ही कर्म निष्ठ है । लोगो को भोजन कराते है । सभी जिम्मेदारी इनकी ही है । आज इनके गुरु को याद करे ।

ये सभी संत गाँव में जाकर सभी भक्तो का पोषण करते है । हम पिछले एक माह में झालावाड में ३-४ बार आये है । अभी देवलिया में आये थे । झालावाड में आनंद आता है । और मुझे अच्छा भी लगता है ।

धर्मदा देव के अलावा कही नही जाना चाहिए । निकाले तो देव को ही दे । नही तो घर पर ही रखे । घर रखने के लिये महाराज एवम् हम नही कह रहे है । महाराज से उपर जाकर हम नही कह सकते है । धर्मदा का दशवाँ भाग निकाले, बीसवाँ भाग किसे निकालना है ? जिसका स्वयं का घरन ही हो । गाडी नही हो । खे तन हो तथा दैनिक मजदूरी करता हो । जो कि अब मजदूर (दैनिक) नही मिलते है । दूसरे के सहारे वाले २० वाँ अंश निकाले । शेष को दशांश धर्मदा करना चाहिए । धर्मदा निकालकर ही दान दक्षिणा देना चाहिए । या न भी दे । मै धर्मादा अवश्य देता हूँ । महाराजश्री से पूछे फिर कोई नही आयेगा । ऐसे भगवान मिले है तो धन की क्या आवश्यकता है । हम भिखारी है क्या ?

तब यह गद्दी, सोफा गलईचा नही था निष्कुलानंदजी फटी टूटी चद्दर पर बैठकर लिखे है । शीद का होकर कंगाल.... भगवान की खुमारी तो देखे । मुझे तो हृदय स्पर्श कर जाता है कि हमे इतना मिला है । लेकिन कुछ लोग कहते है कि अभी पहले जैसा नही है । पहले जैसा कहाँ से लायेगे ? हम आज जैसा रहे तो ही अच्छा है ।

हरिभक्तो के समुदाय की ऐसी दुनियाँ मिली है । तो मर्यादा में रकहर भजन करना चाहिए। आप मेरा ध्यान यू-ट्यूब देखकर रखते है । मैं बिना यु-ट्यब का आप पर ध्यान रखता हूँ । क्या-क्या कौन-कौन, कहाँ-कहाँ ? कारण आप भगवान के है । इस लिये मेरे हुए । इस लिये हमे भी आप पर ध्यान रखना है ।

अब ठाकुरजी का रंग से स्वागत करे । उनका प्रसाद ग्रहणकरे । बाद में लीगल प्रसाद दूसरा लेगे । तैयार ही है । सभी के उपर भगवान आशीर्वाद मिले । ऐसी प्रार्थना के साथ जय

आशीर्वचन श्री नरनारायणदेव के २०२ वे पाटोत्सव

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री, ता. १२-०३-२०२४ : महंत स्वामीने जोरदार भाषण दिये थे । भाषण नही कह सकते है । अंतर खोल कर रख दिये थे ।इसके बाद सब गरीब लगते है । ''पर्व'' के समय कीर्तन की रिकार्डिंग हो रही थी । उसके कीर्तन की एक कडी नरनारायण गायो रे, अवसर नही मले आओ....... इससे अधिक क्या कहना है ? रास्ते के लिये भटक रहे है मत पंथ में ये सब क्या है । अधिक जानने पर भ्रम में आ जायेगे । महंत स्वामी बता दिये है अब मैं नही कहूँगा ।

धर्मादा की बात महत्वपूर्ण है । यह हमारी बात नही महाराज की आज्ञा में आता है । सप्ताह के पहले किसी ने कहा कि नोट बंदी के पश्चात धर्मादा की तकलीफ हुई है ।मुझे कुछ समझ में नही आता है । नोट बंदी से कुछ भी कष्ट नही हुआ है । किसी को हुई क्या ? दानत में तकलीफ नही आये यह देखना है ? क्योकि भगवान की आज्ञा है । मेरी नही, महंत की नही, संत-हरिभक्त की भी नही है । उसमें कुछ मै बदलाब नही कर सकता हूँ । २१२ श्लोक वाली शिक्षापत्री में दोसौ साढे बारह भी नही कर सकता । कोई भी नही कर सकता है । जहाँ तक हो सके महाराज की आज्ञा का पालन करना चाहिए । आप धर्मादा करके दान दे या न दे इसे हमको कोई चिंता नही है ।

जिस बच्चो के माता-पिता नही है । वैसे बच्चो को आज ''आँगन'' द्वारा बहने तथा गादीवालाश्री सम्भालती है । २०-२५ करोड खर्च आया उसके लिये कोई आदेश नही करना पडा था । यह गल्लापेटी में से होग या है । जो कोई नयी सम्मपत्ति या नया प्रोजेक्ट आता है । वह गल्ला पेटी में से आता है ।

दो-तीन लोग दूसरे प्रदेश के मेहमान थे । धार्मिक चर्चा कर रहे थे । मुझसे पूछे, यह सब कैसे होता है । क्यो होता है ? हमने कहा कि यहाँ पर धर्म का व्यापारीकरण नही किया गया है । हम व्यापार नही करते है । हम दर्शन करने गये । तब संतोने प्रसाद दिया था । मन में आया कि ऐसे नही लेते है । हमने पैसा निकाल संतोने मना कर दिया । आग्रह करने पर रसीद दिये थे । यह कैसे ? ऐसा नही करने पर स्थानतरण कर दिया जाता है । देव के नाम पर गलत कार्य नही किया जा सकता है । यह सनातन सत्य बता रहे है । पैर वही पर जायेगा । जहाँ पर देव है ।

अभी दो दिन पहले एक अधिकारी अच्छे मित्र है । वो बता रहे थे कि मै जब युनीफार्म में होता हूँ । तब-तक हमसे बड़े अधिकारी है । नेता है । मै झूकता नही हूँ । टोपी भी नही निकालता हूँ। यह पगडी देव के अलावा कही पर भी नही निलती है । यह गर्व की बात है । क्योकि यह तो गोबर में हाथ डालने वाली बात हुई । महंत स्वामी की बात अलग थी । काठियावाड और झालावाड में इस शब्द का प्रयोग होता है । ये आप भूल गये है । क्योकि दूसरी जगह चले गये है ।

सत्यबात कहने में कोई भय नही है । छिपकर नही बोलना है। महाराजने कोने वाला सत्संग मना किये है । कुछ लोग बोलते है यहाँ नही बगल में आईये कुछ बात करना है । अरे भाई । यहाँ पर ही बात करे । सभा मंडल किस लिये बनाये है । अन्दर कपट है । इस लिये धीरे से कहते है । इसमें लिखो ? किस लिये ? इसके बाद समझ में आ जायेगा । सब समझे ही है । दुकान नही खोलना है । भगवान को दिखाना है । देव के नाम से दुकान नही चलती है । देव का खाने पर आँत फूट जायेगी । यह वास्तविकता है । शुद्धता से कह रहा हूँ । देव का पैसा जो लोग गलत रुप से ले रहे होगे । चाहे वह मेरे हो या दूसरे के हो । आँत को फाडकर खून बाहर आयेगा । हजार बार करता हूँ देव का रुपया देव का ही है । यह देव के आश्रित के लिये उपयोगी होगा यह सिद्धान्त है । और इसका गर्व भी है । नरनारायणदेव देश गादी जो आगे पीछे नही होती है । और किसी को होने भी नही देगी । जब से बापजी ने यहाँ पर बैठाया है । वह पहले दिन बोले थे । और अन्तिम श्वास तक यही बोलेगे । सात पीढी पूरी हो गयी । और सात सौं आयेगी तो भी गद्दी इसी तरह से चलेगी ।

संसार को जो करना है करे । संसार के अंदर चलता है । हम क्यो सभी सिर पर बोझ लेकर चले ? इस संस्था के अन्तर्गत संस्थाओ का व्यापरी करण कभी नही होगा । हम व्यापार नही करते है । करना कुछ दिखाना कुछ ऐसा यहाँ पर नही होता है । ऐसा किये होते तो यहाँ पर नही बैठे रहते । बड़े बड़े लोगो को चपरासी बनाकर रखते ।

लालजी महाराजजी को पत्र दिखा रहे थे। यह सुप्रीम कोर्ट में इन्वर्टेड है। कोर्ट में कोई दावा नही है। सुप्रीम कोर्ट के सिनियर काउन्सीलर के पास बैठे थे । खाली नही बैठे थे। मैं स्वार्थवाला सम्बध नही रखता हूँ। बडे थे, इस लिये कंधे को पकडकर बोले गर्व है । नरनारायणदेव का कोई **Litigation** (दावा) आता ही नही है। वह सत्संग से जुडे नही थे। तो भी उनके ऐसे शब्द थे।

कोविड के समय व्यवस्था में रहने वाले संत और भक्त टेन्शन में थे। रुपया कैसे खर्च करे ? मैने कहा जिसे जरुरत है उसकी मदद करो । उसने ही दिया है । रखकर क्या होगा ? बापजी मुझसे पूछे बिना एकाउन्ट में फोन किये थे। पैसा है न ? शायं जब भोजन करके खडे हुए तो मेरी पीठ थपथपाये थे । उत्तर ऐसा था कि २०० वर्ष चिंता नही करना है। हम ऐसे वैसे नही है। हम लोग मालामाल है।

कोई शर्त रखना है। इस तरह से कार्य करे। नही तो धन नही देगे। इसके लिये मै यहाँ से कह दे रहा हूँ कि उसे दोगुना चेक बनाकर दे दो । डबल लेकर चला जाये । जान छोडे ! भगवान के लिये कोई शर्त नही रखते है। शर्त वाला धन हमे लेते नही है। भगवान मिले है उसका स्वाभिमान होना चाहिए। विकास प्रगति तो आती जाती रहती है। मेरी दादी मोटा मातुश्री थी। तभी दूसरे प्रजाति के लोग स्वामिनारायण नाम का प्रयोग करते थे । ऐसे लोग हवेली में जब आते तो वह पैर उपर कर लेती थी। और बोलती थी मुझे छूनामत छूकर हमे अशुद्ध मत करो । उस समय गोदावरी बा सांख्ययोगी प्रभावशाली थी । उन्हे लोग अम्मा कहते थे । वे बोली आप ऐसा करेगी तो कोई यहाँ पर नही आयेगा । दादी बोली कि भगवान की ईच्छा से सत्संग बढ रहा है। या घट रहा है।

यहाँ पर आना है तो हमारी शर्त पर आना है। भाविन आप को लंदन की शर्त लगती है कि नही ? बापा आप को आस्ट्रेलीया का उसी तरह हमे भारत के संविधान के **(I.P.C.)** (भारतीय दंड संहिता फौजदारी के नियम) लागू पडता है। राजनभाई चैरिटी के नियम लागू होता है कि नही ? यह नरनारायणदेव का दरबार है। यहाँ पर देव का नियम लगता है । मैं अच्छा मेरे भगवान अच्छे है । मे और मेरे ठाकुर है । भगवान मिले है। **Seriously** नाभि से कह रहा हूँ। इससे अधिक ईच्छा करना विचित्र बात है।

हमने तो दो बार पैर नीचे किया। आप को लगाव है। मैं नीचे पलथी मार के बैठा हूं। तपस्वी आप है। पैर पर खडे है। यह ऋषि मुनियो का स्थान है। जो लोग प्रातः आकर ठाकुरजी को हार पहनाते है। प्रातः मंदिर में झाडू-पोछा करते है। सेवा देते है । जिन्हे लगाव है । उन सभी को इस अवसर पर हार पहनाना चाहिए। सिद्धेश्वर स्वामी दरबारी करना बड़ी बात नही है। यह तो अपना कार्य है। साफ सफाई करने में क्या कष्ट है। कचरा को कच्छी भाषा में घसिया कहते है। कचरेवाला सफाई तो करना ही पडता है। मै आज जिम में वैक्यूम का कार्य करके आया हूँ। क्योकि फिर मुझे ही वहाँ पर जाना होगा। ममता नही है तो सुख नही मिलता है। भाडे के मकान का बल्ब नही बदलते है। स्वयं के घर में दरार हो जाने पर सिमेन्ट लगा देते है। ये दैव, यह संस्था, ये संत, ये हरिभक्त अपने है।

आज नये संत बने है। उनसे विशेष आग्रह है कि गाँवो में अवश्य भ्रमण करे । म्युजियम में जो प्रासदी के पत्र में जो लिखा है। वह सामान्य बात नही है। इसमें से आधा भी पालन नही कर पायेगे। चराडवा में बोले ये हम सत्संगी जीवन शास्त्र बंद ही रखते है । यहाँ पर पोथी पैक है न ? आप देखले । खोलकर दिखा देगे तो इसमें से कोई भी नही रुकेगा। लो यह अपनी कंठी । मनोजभाई ! गलत बात है तो हमे उत्तर दे । महाराज ने कुछ शेष रखा ही नही है। हम लोग नल में कपडा बांधते है।महाराज स्वभाव में झनना बाँधते है। ब्रह्मानंद स्वामी को कहते है कि इतना ही कपडा पहनता है। मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी ये सभी का महाराजने कठिन परीक्षा ली थी। हम सभी न तो तप न व्रत किये है। घर बैठे भगवान मिल गये है। इसकी महानता समझ कर रहे।

प्रतिदिन अधिक पढने से कुछ नही होता है। कथा का क्रम होता है। श्रवण मनन, चिंतन और नित अभ्यास यह हमे याद रहो गया है । शायं काल को मंदिर में जाने के लिये महाराजने क्यो आदेश दिया है ? पूरे दिन ईधर-उधर भटके रहते है । मन की वृत्ति ईधर-उधर चली गई रहती है । इसके पश्चात भवान में जुडने के लिये है। रात्रि में सोते समय अध्ययन करके विचार एवम् चिंतन करना । और बिस्तर भी भगवान की कृपा से ही मिला है।

अभी आप सभी ने विडियो देखा है । उसमें AC आया था । तब ताली बजी थी । विडियो में रसोईघर दिखाई दे रहा था । खटिया, तकिया, चद्दर ये कुछ नहि दिखाई दिया ? AC में तो मर जाये । प्रातः उठ नही पाते है । तकलीफ हो जाती है । लंदन वालो से पूछे । कांतिभाई जेठालाल सर्दी Winter आता है । इस लिये म्भारत में आ जाते है । ठंडी से हड्डी दर्द करती है ।

मैं तो इन संतो की कम उम्र से गाँव धुमने लगा था । स्कूल में नही जाना था इसलिये । इन संतो को कोई अन्य कार्य नही है । सत्संग में पढे । सब कुछ पढलिये । भगवान को जान लिये ये ही अधिक है । दूसरी कोई डीग्री नही चाहिए। क्या करने आये है । क्या कर रहे है ? हमे क्या करना है । यह जानने वाला ज्ञानी है । दूसरा प्रमाणपत्र नही चाहिए। एक भाई के लेटर हेड में इतनी डिग्री लिखी थी कि उसमें जगह ही नही थी । डिग्रीओ का क्या ? मैं कौन हूँ इसका ज्ञान ही नही है । मानव शरीर किस लिये मिली है । इस लिये डिग्री लिखते है । मानव शरीर किस लिये मिल है ? इस लिये डिग्री लिखते है । मै फलाने हूँ ।

मेरी ही बात करे । आज कई धर्माचार्य है । अभी धर्माचार्य होना भी एक शरम जनक बात है । धर्म के नाम से धतिंग चल रहा है । और कही पर इतना अनाचार नही है । धर्माचार्य का नाम आते ही लोग समझते है कि यह निश्चति चोर होगा । सत्य बता रहा हूँ । आप को ज्ञात होगा ही । आप लोगो को धर्माचार्य के पास जाने पर शर्म आती है । कि नही ? जाने पर लगता है कि थैली हल्की हो जायेगी । यह बात यहाँ पर नही है । यहाँ पर आप बिना भय के आ सकते है । आस्ट्रेलिया डेरीमीट (मेलबोर्न) में मंदिर के लिये सात लाख की आवश्यकात थी । दो बिलियन हो गया । पत्रिकामें लिख दिये Donation is not accepted (दान स्वीकार नही होगा) बल्कि हरिभक्त सोच रहे है कि अब दान कहाँ पर लिखवाये । हमने कहा आप लोग अपने पास रखे। दो-तीन दिन आनंद करे । अपने घरवालो के लिये शापिंग करके घर ले जाये । भगवान जैसा भगवान मिले है । इसे पाटोत्सव मनाना कहते है । सब कुछ होगा । कोई रुकावट नही आयेगी । प्रयत्न छोडना नही है । यह सर्वोपरी भगावन की आज्ञा है ।

झालावाड पंचमहल, बालासिनोर, लूनावाडा, दूर दूर के गाँवो से देश-विदेश से सभी आये है । संत भी है । हरिस्वरुप स्वामी जी है । मुक्तराज, मुक्तजीवन स्वामी है । के.पी. स्वामी, मूली के महंतजी भी है । सत्संग करियेगा । टेका लगाकर बैठना नही है । साथ चलना ही अच्छा है । आचार्य ने गाँवो में घुमना ऐसे कही पर नही लिखे है । मंत्र दीक्षा देना और प्रतिष्ठा करना हमारे लिये है । पढे, सभी संत धुमते है । यदि धुम नही रहे है तो सम्भल कर प्रारम्भ करें । दो दूसरी बार अधिक आनंद प्राप्त होगा । ग्हहस्थ अपने बच्चे को छोटी अवस्था में गृह कार्य में नही लगाता है । नये संत से अवश्य कहे । गाँव को सम्भाले । संस्था तो भगवान सम्भाल रहे है । मैं यहाँ बैठा हूँ ? एकादशी-पूनम के दिन संतो के साथ बैठते है । फिर भी पिछले पूनम को गाँव में गये थे । अनुपस्थिति नही था । गाँव में मेरा चक्का धुमता है । यही हमारी माला धुमती है । हाथ में मालालेकर मुझे अच्छा नही लगात है ।

कुछ लोग गणनयंत्र रखकर माला फेरते है । पहले भी बताये है । महाराज गणित के टीचर नही है । अक्षरधाम ले जाते समय महाराज गणन यंत्र को नही देखेगे ? आप कितना जप किये है ? एक भाई तो मोबाईल में उगली फेर रखे है । स्वामिनारायण.... स्वामिनारायण गिने के लिये की इतना जाप हुआ है । उसके सिर पर मोबाईल से चोट कर देना ।मुझे कोई विरोध नही है । यह मेरा व्यक्तिगत विचार है । वास्तव में मुक्तानंद स्वामी के मतानुसार एक माला भी नही फेरते है । मह क्या गणना कर सकते है । कौन सा प्रमाणपत्र लेना है । हम भगवान के नजर में आ जाये यही बडी बात है । दूसरा कुछ करने जैसा नही है । अन्न, वस्त्र, इज्जत तो महाराजने दिया है । और देते रहेगे । इसकी चिंता नही है । स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए ।

ये भावनभाई पाठक का लडका अंग्रेजी ही जानता है । यहाँ पर क्या हो रहा है । उसे ज्ञात नही । इस लिये तनाव की अवस्था में बैठा है । मैं मुस्कराता हूँ तो वह भी मुस्करा दे रहा है । शेष तो लगता है चिडिया घर मे आ गया है । यह देव के दरबार में आया है । उसे देव के अलावा कुछ समझ में नही आ रहा है । भाषा की जरुरत हे भगवान के लिये ? अब अन्नकूट आरती करने जा रहा हूँ । आप लोगो का मंगल हो । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

परब्रह्म भी आश्चर्य चकित होते होगे

– नटूभाई बी. पटेल (राजपुरवाले – कैनेडा)

श्रीजी महाराज के अहमदाबाद के मध्य में रहने वाले हरिभक्तो में विप्र नथुराम भट्ट तथा दामोदर पटेल को भूल नही सकते है । दामोदर भगत की सेवा तो अद्वितीय थी । दामोदर भक्त साधारण परिवार के असाधारण भक्तिक रने वाले जीव था । दामोदर भगत डाकोर के भक्त बोडाणा के दूसरे अवतार कहे जाते है । वर्ष के कुछ महीने काम करके परिवार का व्यवहार चल सके इतना कमाकर रखते थे। जब श्रीजी महाराज अहमदाबाद आते थे । तब सब कुछ कार्य छोडकर महाराज की सेवा में लगे रहते थे । लगभग तीस वर्ष तक बिना भेदभाव के उन्होने महाराज संतो एवम् सम्प्रदाय की सेवा किये थे । विना शर्म के अच्छी खराब सेवा को विना वाद-विवाद के हर्ष के साथ श्रीजी महाराज के आज्ञा में रहकर जीवन बिताये थे ।

दामोदर भगत सरल स्वभाव था । संतो के सम्पर्क से निष्ठावान, सत्संगी बने थे। महाराज के कहते ही तैयार हो जाते थे। कथा वार्ता दर्शन की महिमा समझकर उद्देश्यपूवक सत्संग में जुडे रहते थे। उनकी समझदारी हास्य स्वभाव पारदर्शक वाणी महारजा को अच्छी लगती थी । इसके कारण श्रीजी महाराज को दामोदर भगत का सानिध्य अच्छा लगता था ।

विप्र नथुराम भट्ट उत्तमप्रकार के ज्ञानी, विद्वान, ब्राह्मण साथ को समागम परिणाम स्वरुप दामोदर भगत ज्ञान, उपासना ।जैसे गुणो सेपूर्ण हो गये थे। नथुराम भट्ट के साथ ज्ञान गौष्ठी के कारण वे सद्‌गुणो से मुक्त सेवा में परिपक्व हो गये थे। उम्र के हिसाब से नथुराम भट्ट श्रीजी महाराज की सर्वोत्तता को जानते थे । दामोदर भक्त को इस बात का ज्ञान करवाये ते । इस कारण से श्रीजी महाराज दामोदर से खुश रहते ते । सुरा खाचर की तरह सखाभाव दामोदर के साथ रखते थे । दामोदर भक्त भी श्रीजी महाराज की खुशी के लिये सदैव तत्पर रहते थे ।

एक समय की बात है कि श्रीजी महाराज की आँख में एक कण आ गया । आँख में दर्द और परेशानी लगने लगी । आँख लाल हो गयी । यह देखकर दो-तीन हरि भक्त आँख से कण निकालने का प्रयास किये । लेकिन कण की आँख में से निकाल नही पाये । उसी समय वहाँ पर दामोदर भक्त आ गये । महाराज की ऐसी अवस्था देखकर बोले महाराज ! यह कार्य मुझे अच्छे से आता है । अभी मैं बिना कष्ट के आँख से कण बाहर कर दूँगा । बस महाराज ! आप सेवक को आदेश दे । श्रीजी महाराज के आँख की पलकं उठाकर दामोदर भगत कुशलता पूर्वक जीभ के सहारे कण को क्षणभर में निकाल दिये थे ।

श्रीजी महाराज की आँख अच्छी हो गई । दर्द कम हो गया । धीरे-धीरे लालिमा कम हो गयी । श्रीजी महाराज बोले, दामोदर आपने तो अच्छा काम किया है । लेकिन आप मेरी आँख की पलक खोली है । उशका क्या ? तभी दामोदर भगतने कहा हे जगत के ना थ । संसार आश्चर्यचकित हो ''क्या परब्रह्म आश्चर्यचकित होते होगे ।'' आँख में कण अन्दर चला गया था । यदि मैने नही निकाला होता तो अधिक दर्द होता तथा नींद भी नही आती । दर्द भी होता । न चाहते हुए भी हमें ऐसा करना पडा था । दामोर भक्त बोले महाराज ! इस लोक में यदि किसी की सहायता करे तो वह पुरस्कार देते । प्रशंसा भी मिलती ।

आप तो कभी निकाल रहे है । ऐसा आप कहेगे तो दूसरी की सहायता कौन करेगा ? दीनानाथ ।

दामोदर भक्त की प्रेमपूर्ण शिकायत की मर्मभरी बात से महाराज अति खुश हुए । हँसते हुए अपने हाथो से अधिक मात्रा में दामोदर भक्त का प्रसाद दिये । यह सभी प्रसाद दामोदर सभी हरिभक्तो को बाँट दो । दोनो हाथ जोडकर विनय पूर्वक दामोदर भगतने कहा ।

हे महाराज केवल प्रसाद से ही पूरा नही करे । हमने जैसे आप का काम किया है । उसी तरह से आप मेरा काम कर देना ।

तब महाराज ! बोले दामोदर में पूरे संसार कार्य

करता रहा हूँ। आपने तो मेरा काम किया है। बोले क्या करु ? तभी दामोदर भक्त ने कहा।

हे ! सभी के कारण : दया सिंधु ! कृपानाथ। मेरे हृदय रुपी आँख में मायारुपी कई कण समाये है। जो अधिक दर्द देने वाला है। मोटप, अहंकार, ममत्व रुपी कण आप की भजन करने में विघ्न करते है। खटकता रहता है। जीव को विष समान बना देता है। अहंकारी बना कर यह कण जीव के मोक्ष को खराब करता है। यह जीव को विगाडे नही यह आप देखते रहे। आप की कृपा के विना यह कण निकलने वाला नही है। अज्ञानता दूर करके सुखी बनाये। भक्त दामोदर की समयानुकूल इस प्रकार की प्रार्थना से विनय, विवेक, विनम्रता देखकर महाराज अति खुश हुए।

दामोदर का हाथ पकडकर महाराज ने कहा कि हे भक्त ! आप की सभी जिम्मेदारी मेरी है। और रहेगी भी। आप तो सेवा में भी निपुण हो। और माँगने मे भी निपुण हो। ऐसा कहकर अपने गले का हार उतारकर दामोदर भक्त को पहना दिये। इस प्रकार भक्त को श्रीजी महाराज ने अति खुश कर दिया।

(अनु. पेईज नं. ६ से आगे)

का सिद्धान्त है। धान्य का अन्न कहा जाता है। निरान्न अर्थात् उपवास जो व्यक्ति अन्न का त्याग करता है। उसे उपवासी कहा जाता है।

एक अत्यन्त भयानक बात कही गयी है कि एकादशी के दिन धान में प्रेत आत्मा का वास रहता है। गंदी आत्माये अन्न खाने से शरीर में प्रवेश कर जाती है। हम देखते है कि किसी व्यक्ति के उर्ध्वकर्म में जो पिंड बनाया जाता है। वह चावल एवम् जो के आटे से बनाया जाता है। मृतआत्मा पिंड में आकर सतकार्य को स्वीकार करती है। एकादशी के अलावा अन्न का ब्रह्मा रक्षा करते है। पापी आत्मा के प्रवेश लेने के कारण एकादशी के दिन अन्नकण पापमय हो जाता है। अपने आराध्यदेव स्वामिनारायण भगवान ने गढडा मध्य प्रकरण आठवे वचनामृत में स्वमुख से एकादशी की कथा की महिमा बताये है। और शिक्षापत्री श्लोक संख्या ७९-८० में एकादशी व्रत का आदर करने की आज्ञा दिये है।

एक सूक्ष्म विधान जानने योग्य है। अन्न में जल का विशेष भाग होता है। चंद्र जल प्रधान पदार्थो पर अधिक प्रभाव डालता है। एकादशी तिथि का चंद्रजल विशेष भाग वाले पदार्थ पर विपरीत असर डालता है।एकादशी तिथि के दिन धान्य चंद्र देव के दोष युक्त बनता है। जो मनुष्य पके अनाज खाता है। उनकी मन-बुद्धि और शरीर दोषित होती है। जो स्वास्थ्य एवम् आध्यत्मिक जीवन पर खराब प्रभाव डालती है।

फागण सुद-१५ (पूनम)

सत्संग सभा के यजमानश्री

अ.नि. ईश्वरभाई शंकरभाई भूलाभाई पटेल, अ.नि. विक्रमभाई ईश्वरभाई पटेल - ह. जीगरभाई विक्रमभाई पटेल, निकश, प्रिशा, जेलिन - रामदासबापा परिवार (उनावा)।

फूलदोलोत्सव यजमानश्री

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अ.नि. रमणभाई शंकरभाई भूलाभाई पटेल, संजयभाई रमणभाई पटेल, केतनभाई रमणभाई पटेल, मयुरभाई रमणभाई पटेल, आदर्श - रामदास बापा परिवार (उनावा)।

धजा के यजमानश्री

प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से फेनिल (राजा) मयुरभाई रमणभाई पटेल, स्मित (निलु) केतनभाई रमणभाई पटेल - रामदासबापा परिवार (उनावा)।

જેતલપુર મંદિરના ૧૯૮મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

જેતલપુર દેવ સરોવરના નવીનીકરણનું ખાત મુર્હૂત કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ભાઉપુરા મંદિરના ૧૬માં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

બાકરોલ મંદિરના ૧૬માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ચરાડવા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં યજમાન પરિવાર સાથે પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

સીનસીનાટી (અમેરિકા) નૂતન મંદિરનું ખાત મૂર્હુત કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી અને દર્શનનો લાભ લેતા હરિભક્તો

કોલોનિયા(અમેરિકા) મંદિરમાં ઠાકોજીની આરતી ઉતારતા તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

બોલીંગગ્રીન (અમેરિકા) મંદિરમાં ઠાકોજીની આરતી ઉતારતા તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીના ઓસ્ટ્રેલિયાના પ્રવાસ દરમ્યાન સીડની, બ્લેકટાઉન મંદિરના ૧૯મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને બાળકો સાથે પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

મલબોર્ન બોરોનીયા મંદિરમાં ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને યુવકો સાથે પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

સિડની કીંગ્સપાર્ક મંદિરમાં સભામાં આશીર્વાદ પાઠવતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

મેલબોર્ન ડેરીમટ પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી નું સ્વાગત સામૈયુ

મેલબોર્ન ડેરીમઠ મંદિરમાં શાકોત્સવ કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી સાથે અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી

કાંકરિયા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે બાળ સ્વરૂપ હનુમાન દાદાનો અભિષેક કરતા અને સભામાં આશીરર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

નટવરગઢ (મૂળી પ્રદેશ) મંદિરના ૨૦માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

હળવદ બહેનોના નૂતન મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા કરતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

હળવદ મંદિર (જૂનું ટાવરવાળુ) ના ૧૮૦માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની
આરતી ઉતારતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

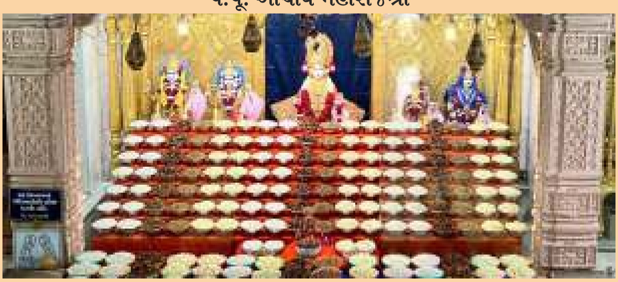

નારણપુરા મંદિર અન્નકૂટ દર્શન

હિંમતપુરા મંદિરનાં ૫માં પાટોત્સવ પ્રસંગે રાત્રી પારાયણ

भगवान के तीन गूढ संकल्प : देव, आचार्य, शास्त्र

- दिलीप खीमजी हालाई (लंडन - यु.के.)

श्री स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी के उपर अपने जीवन काल में अगणित आत्माओ को मोक्ष प्रदान किये है। यह सिखाये है कि जीवन में मोक्ष सरल और प्राप्य है। एक स्थान पर भगवान ने अपने से स्वयं पूछे है कि 'जब हम अक्षरधाम में चले जायेगे तो इसके बाद हमारे अनुयायी कैसे मोक्ष प्राप्त करेगे ? यही क्षण है जब भगवानने तीने संकल्प को पूर्ण करने के लिये निर्णय लिये। देव, आचार्य, शास्त्र इस विषय पर ध्यान पूर्वक सत्संगिजीवन धर्म ग्रंथ में लिखे है। जो निम्न लिखित है।

निवसंस्तत्र भगवानेकदा विजने स्थितः।
व्यचिंतयत्समनसास्वावतार प्रयोजनम् ॥१॥
अंतर्हिते मयि भुवोभक्ता एतेतुमच्छ्रिताः।
निरालंबा भविष्यंतिकार्यं किंचिच्चतत्कृते ॥८॥
एवं विचार्य्य भगवान्प्रतिमा आत्मनो भुवि।
प्रतिष्ठापयितुंत्वैछन्मंदिराणि विधाप्यसः ॥९॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-४, अध्याय-२४, श्लोक-१,८,९)

देव :

कारयित्वा मंदिराणि तत्र स्वप्रतिमा अहम्।
स्थापयेयततस्ताश्च सेविष्यंते हि मानवाः ॥१०॥
स्वधर्मे वर्तमानानां पुंसां तत्सेवनादिह।
सिद्धिमेष्यति सर्वेषां पुरुषार्थ चतुष्टयम् ॥११॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-४, अध्याय-२४, श्लोक-१०,११)

आचार्य :

भक्तिमार्गस्य पुष्ट्यर्थं मंत्रदीक्षाप्यपेक्षते।
अतो धर्मान्वये श्रुद्धे गुरुतां स्थापयेय च ॥१२॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-४, अध्याय-२४, श्लोक-१२)

शास्त्र :

धर्मज्ञानविरक्तीनां भक्तेश्चावगमायतु।
ग्रंथं कर्त्ताशतानंदोमच्चरित्रोपवृंहितम् ॥१३॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-४, अध्याय-२४, श्लोक-१३)
सिद्धांतं सर्वशास्त्राणां तेनज्ञास्यंति मच्छ्रिताः।
एवमेव ततः कृत्वायायां धामस्वकं भुवः ॥१४॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-४, अध्याय-२४, श्लोक-१४)

भगवान स्वामिनारायणने इन तीन संकल्पो का महत्व बार-बार याद कराये है।

मया धृतोऽवतारोऽयं यदर्थं तदशेषतः।
कार्यं कृतं भूतलेऽत्र न किञ्चिद्‌दवशेषितम् ॥२॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-५, अध्याय-६८, श्लोक-२)
विधाप्य मन्दिराण्यत्र स्वाश्रितानां सुखाय च।
स्थापिता मूर्तयः स्वस्य नरनारायणादयः ॥११॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-५, अध्याय-६८, श्लोक-११)
भक्ति मार्गप्रवृत्त्यर्थं धर्मवंश्यद्विजेषु च।
आचार्यता स्थापिताऽथ दीक्षारीतिः प्रवर्तिताः ॥१२॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-५, अध्याय-६८, श्लोक-१२)
सदाचार प्रवृत्त्यर्थं स्वाश्रितेषु प्रवर्तिता।
सर्वसच्छास्त्रसारो हि शिक्षापत्री मया भुवि ॥१३॥
(सत्संगिजीवन प्रकरण-५, अध्याय-६८, श्लोक-१३)

अपना सम्प्रदाय कभी कभार प्रत्यक्ष सम्प्रदाय के रुप में जाना जाता है। जहाँ पर भगवान सदैव हम लोगो के मध्य रहते है। भगवान इन तीन, स्वरुपो में दिखाई देते है। ये तीनो एक दूसरे के पूरक है। जैसे पिरामिड के तीन कोण है।

यह एक मजबूत नीव है जो अपने सम्प्रदाय को सातत्य और मजबूती प्रदान करता है। इसी प्रकार से अपना सम्प्रदाय दिनो-दिन आगे बढता रहेगा। प्रगति भी करेगा। मात्र आवश्यकता है कि अपने श्री नरनारायणदेव, धर्मकुल और शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन, वचनामृत जैसे शास्त्रो के प्रति हमारी श्रद्धा और विश्वास बना रहे। जिससे जीवन में मोक्ष प्राप्त होगा। और अक्षरधाम में स्थान प्राप्त होगा। अभी कुछ समयपूर्व पर्व उत्सव के समय तीनो संकल्पो का दर्शन एक साथ हुआ था। जो अपने भगवान का संकल्प (देव, आचार्य और शास्त्र) की याद दिलाया है।

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अपने म्युजियम का १३ वाँ वार्षिकोत्सव अभी फाल्गुन सुद-३ को ता. १२-०३-२०२४ मंगलवार के दिन प्रत्येक वर्ष के समान उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस वर्ष पाँच-पाँच मुख्य यजमानने लाभ लिया था । दोपहर २ बजे निर्धारित समय पर सभी महापूजा की पाटला के साथ धीरे-धीरे म्युजियम के तरफ आने लगे थे । सीधे ३ बजे महापूजा तथा श्री नरनारायणधेव के अभिषेक की विधि प्रारम्भ कर दी गयी थी । भूदेवो द्वारा कहे जाने वाले मंत्रोचार से आठ नम्बर के होल में दिव्यता का अनुभव होने लगा । शायं ५-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री आकर पूर्णाहुति की आरती उतारे थे । वहाँ पर उपस्थित लोग अच्छा अनुभव प्राप्त किये । इसके बाद १२ नम्बर के होल में संतो और प.पू. बड़े महाराजश्रीके आशीर्वचन के बाद यजमानो का यथायोग्य सम्मान किया गया था । इसके बाद संत-हरिभक्तो को महाप्रसाद दिया गया था । लोग आने वाले वर्ष के पाटोत्सव के उत्सुक हो रहे थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री अभिषेक की सूची-मार्च-२०२४

ता. ०१-०३-२०२४	ख्वाईस अनुंजभाई पटेल - नवरंगपुरा - जन्म दिन के अवसर पर ।
ता. ०९-०३-२०२४	प.भ.श्री वनिषाबेन कांतिभाई हालाई - यु.के.
ता. १२-०३-२०२४	म्युझियम के १३ वाँ वार्षिक उत्सव की समूह महापूजा -
	हस्ते (१) प.भ.श्री घनश्यामभाई कुबेरभाई पटेल - विहारवाला
	(२) प.भ.अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह परिवार - सेमिट्रोनिक्सवाला
	(३) प.भ.अ.नि. तलशीभाई गोविंदभाई सापरीया - घूडकोट हा. सुरत.
	(४) प.भ.अ.नि. रसिकभाई अंबालाल पटेल - मोखासणवाला
	(५) प.भ.श्री कमलेशभाई एच. शाह - उस्मानपुरा.
ता. १७-०३-२०२४	प.भ.श्री दिनेश रवजी पिंडोरीया - यु.के.
ता. २०-०३-२०२४	प.भ.श्री शनि डेनीभाई पटेल - यु.एस.एस.
	प.भ.श्री ममताबेन डेनीभाई पटेल परिवार - यु.एस.ए.
ता. ३१-०३-२०२४	प.भ.श्री नरेन्द्रभाई भगवानदास पटेल - हिरावाडी-बापुनगर.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-मार्च-२०२४

रू।. ५१,०००/-	प.भ.श्री माणेकभाई नारणदास पटेल - कलोल
रू।. ५०,०००/-	प.भ.श्री अंबालाल सोमदास पटेल - वडु

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) प्रबोधिनी एकादशी जागरण सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "स्थायी रुप से जागते रहे ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अनन्त जन्म से भटक-भटककर थक गये है । जहाँ पर जाना है । वहाँ तक पहुँचे ही नही है । जाने के लिये प्रयत्न जारी है । इस लिये यहाँ पर बैठे है । ऐसी अपनी स्थिति है । आप सभी शूरवीर भक्त है । इस लिये नियमित सभा में आते है । चार प्रकार के भक्त होते है । तामसी, राजसी, सात्विक और निर्गुण । जब सतयुग था तब तामसी भक्त कम थे । अभी तो कलियुग चल रहा है। कलियुग में तामसी भक्त अधिक है । तामसी भक्तो का लक्षण कैसा होता है ? तामसी भक्तो में दम्भ अधिक होता है । दिखावे के लिये भजन दान करते है । मंदिर दर्शन करे आता है तो वह चाहता है कि लोग मुझे देखे कि मैं मंदिर में आता हूँ । दूसरा तामसी भक्त शिकायत करने वाला होता है । भगवान के पास आकर शिकायत ही करता है । अपने अहम का त्याग नही करना चाहाता है । भगवान को ऐसे शिकायती भक्त अच्छे नही लगते है।

दूसरा प्रकार है । राजसी भक्त, राजसी प्रकार के भक्तो को संसार की वस्तु प्राप्त करने मे रस होता है । इस लिये संसार में लिप्त रहता है । राजसी भक्त भगवान के प्रति निष्ठा रखते है । लेकिन भगवान के भक्त और संतके लिये आदरभाव नही होता है । और भगवान से सब कुछ माँगते है । सम्पूर्ण निष्ठा के बाद भी उच्च श्रेणी में आता ही नही है। ऐसे भक्त भगवान को प्रिय नही होता है।

तीसरे प्रकार के भक्त सात्विक होते है । सात्विक भक्त अपने द्वारा किये गये कर्मो का श्रेय भगावन को देते है । और कार्य भगवान के चरणो में अर्पित कर देता है । भगवान की दया या कृपा से सब कुछ हुआ है । भगवान हमारे मन में विराजमान है । भगवान की प्रेरणा से ही यह कार्य हुआ है । ऐसी भावना रखता है । ऐसे सात्विक भक्त भगवान को प्रिय होते है । लेकिन अति प्रिय नही होता है।

अब आते है निर्गुण भक्त । निर्गुण भक्त भगावन को अति प्रिय होते है । निर्गुण भक्तो का लक्षण कैसा होता है । उसे भगवान के अलावा कुछ अच्छा नही लगता है । भगवान जो कुछ भी देते है । वह उसमें खुश रहता है । भगवान से कभी शिकायत नही करता है । ऐसी भावना एवम् विचोरवाला होता है । मुझसे कोई ऐसा कार्य नही हो जाये जिसेजे भगवान नाराज हो जाये। मेरे कारण भगवान को नीचे सिर नही करना पडे । सदैव ऐसा ही भाव रहता है।

यहाँ पर एक बात याद आयी है । एक मुस्लिम भक्त था । आर्थिक रुप से कमजोर था । मंदिर के बाहर कचरा हटाने वाला था । मंदिर के दरवाजे से कचरा उठाकर । दूर से भगवान का दर्शन भी करता था । एक दिन भी विना दर्शन के नही जाता था । उसके पास संतान नही थे । उसकी पत्नी प्रतिदिन उसे अपशब्द बोलती थी । आप अल्लाह से कभी कुछ माँगा नही है । तुम्हे अल्लाह के प्रति श्रद्धा नही है । आप प्रतिदिन मंदिर का दर्शन करते है । इस लिये ऐसा हुआ है । उसमें सभी निर्गुण भक्त के लक्षण थे । इस कारण से उसकी पत्नी भगवान के लिये 'अपशब्द' बोलती थी । वह उसे सहन नही कर सकता था । उसने एक दिन भगवान के पास से माँग किया । इस प्रकार माँगा की इसका मुख भगवान बंद करो । अर्थात् आप के लिये । अपशब्द का प्रयोग नही करे । आप के लिये बोला गया अपशब्द मैं सहन नही कर सकता हूँ । भगवानने उसे संतान सुख दिया । सभी खुश हो गये । मुस्लिम भक्त थी खुश हो गया ।

क्यो ? भक्त इस लिये खुश हुआ कि अब भगवान के लिये मेरी पत्नी 'अपशब्द' का प्रयोग नही करेगी । निर्गुण भक्त विलोम परिस्थिति में भी भगवद् कृपा देखता है । उदाहरण स्वरुप यदि हमें अपने आँख से दिखाई नही देता है । तो हम शिकायत करते है कि ''भगवानने हमारी आँखे लेली है ।'' लेकिन निर्गुण भक्त जो अंधा होता है । वह यह सोचता है कि जिसके पास आँख है । उसकी सभी जिम्मेदारी होती है । वह गिर जाये तो कहा जायेगा । कि उसके पास तो आँख थी । सूरदास भक्त यह सोचता है कि हमारे पास तो आँख ही नही है । इस लिये मेरा हाथ पकडकर रास्ता बताना भगवान की जिम्मेदारी है । यह मेरे लिये अच्छा है । इस तरह किसी भी अवस्था में निर्गुण भक्त का हृदय विचलित नही होता है । तो हमे ऐसा निर्गुण भक्त बनना चाहिए। यह कलियुग में कठिन है । इसके लिये अन्तर आत्मा की सफाई करनी पडती है । सब एक साथ नही होता है । इसके लिये प्रतिदिन स्वच्छता करना चाहिए। जंग लगने पर कई दिन की सफाई, के बाद पात्र चमकता है । यदि पुनः सफाई यदि नही करे तो गंदा हो जाता है । हम लोगो को कई जन्म की जंग लगी हुई है । सभी अंदर की सफाई होनी चाहिए । आप कपडे धोते है तो कई बार स्वच्छ जल से धोने पर गंदगी दूर होती है । यदि पानी गंदा रहता है तो पुनः गंदगी आ जाती है । इस लिये निष्ठा शुद्ध रखना चाहिए । सत्य निष्ठा से भगवान के पास जाया जा सकता है । माला एक प्रकार का साधन है । साध्य तक जाने के लिये । भगवान साध्य है । यह ध्यान दे कि साधन में अटक नही जाये। साध्य तक जाता है । माला छूट भी जाये तो मन क्रिया करे । अन्तर से प्रभु का स्मरण चलता रहे । यह क्रिया स्थायी रहे । आप रात्रि में आराम भी करे । लेकिन चिंतन अवश्य करे। घर में हम ध्यान देते है कि रात्रि में चोर चोरी न कर पाये । सब तरह का प्रबन्ध करते है । उसी प्रकार हम सभी मेहनत करके सद्गुणो का भंडार किये है । कोई इसका हरण नही करे । माया चोर है । भेष बदलकर आयेगी और चोरी कर ले । यदि हम जाग रहे है तो चोर के साथ लड सकते है । आप के पास भी हथियार होना चाहिए । नही होने पर लडाई कैसे कर सकते है । विरोध भी नही कर सकते है । हरणकरे तो जाने देना होगा । मान ले लोभ हो तो उसका सामना करने के लिये । संतोष का रहना अति आवश्क है । सब कुछ यहीं पर छूट जाने वाला है । शीत बिन्दू की तरह है । तेज हवा आने पर विखरे जाती है । अंत समय में सब कुछ छूट जाता है । इस लिये हमेशा सचेत रहना चाहिए। संसारी चोर का देख सकते है । मायारुपी चोर कब लूट ले ज्ञान नही होगा । अंत समयपर ध्यान आयेगा कि क्या-क्या खो गया है । घर के सभी सामान एकत्र होने पर अच्छे लगते है । लेकिन देखने पर पता चलता है कि क्या चला गया है । इसी प्रकार हमें इस समयज्ञात नही होता है कि सद्गुणो के द्वारा भक्ति रुपी साधन एकत्र किये है । इसमें से क्या कम हुआ है । शरीर छोडते समय पता चलेगा । क्या क्या चला गया है । इस समय अवसर भी नही प्राप्क्त होगा । इस लिये स्थायी रुप से सावधान रहे । अपने कितने भाग्यशाली है । तो यहाँ पर बैठे है । कितनी उत्तम भूमि है । यहाँ पर बैठकर 'भजन' करते है । भगवान के चरण कितनी बार स्पर्श हुए होगे । यह पवित्र भूमि है । लोग दर्शन को तरसते है । हम लोग तो पूरी रात यहाँ पर बैठते है । महाराज के द्वारा प्रस्थापित 'नरनारायणदेव' मिले है । इसका प्रतिदिन दर्शन का लाभ मिलता है। इससे अधिक क्या चाहिए । इसलिये आवश्यतानुसार संचय करे । अनाशक्ति है । आसक्ति अधिक ऐसा काम नही हो तो समझना हम प्रगति के मार्ग पर है । इसलिये जागृत अवस्था में रहे ।

•

स्वामिनारायण का भजन

– पटेल लाभुबेन मनुभाई (कुंडाल)

संवत १८५९ के मार्गशीर्ष सुद तेरस को रामानंद स्वामी ने फणेणी में शरीर का त्याग किया था । भक्तगण शोक के सागर में डूब गये थे । सहजानंद स्वामी और

मुक्तानंद स्वामी ने भगवत गीता की कथा प्रारम्भ करवाये । महाराज प्रतिदिन कथा के समय निरुपण करते थे । बात करते थे । ग्यारहवे दिन पारायण की पूर्णाहुति हुई । विप्रो को दान दिये । सभी को भोजन खिलाये थे ।

चौदस दिन बीत गया । संवत १८५९ के मार्गशीर्ष वद एकादशी का दिन आया । सभी भक्तगण सहजानंद स्वामी को एक अलग सिंहासन पर आग्रह करके बैठाये । बगल में मुक्तानंद स्वामी और सभी संत बैठे थे । सामने सभी हरिभक्त बैठे थे । महिलाये दूर जाकर बैठी थी ।

धर्मशास्त्रो के आधार पर धर्म नियम का उपदेश देते सहजानंदने कहा ''रामानंद स्वामीने मुझे उनेक स्थान पर बैठाये है । इस लिये लाभ के लिये बात बता रहा हूँ । आप सभी ध्यान से सुने और जीवन में उतारे ।''

''त्यागी साधु को सत्य, दय, तप, पवित्रता, देहदूमन अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शास्त्रो को नियमित पढना, सेवा, त्याग, इंद्रियो को बस में रखना हैं । आत्मरुप रहना सद्‌गुणो धारण करे ।''

''त्यागी-गृहस्थ सभी हरिभक्त परमेश्वर की भक्ति करे । शराब का सेवन नही करे । मासांहार नही करे । हिंसा नही करना , आत्म हत्या नही करना चोरी नही करना विमुख अवस्था में कथा को नही सुने । ईधर-उधर का भोजन नही करना चाहिए ।''

''गृहस्थो को शास्त्र के अनुसार सोलह संस्कार का पालन करना चाहिए । अपने धर्म में है । वेद, ब्राह्मण, साधु, पतिव्रता और विद्वान का सम्मान करे । गाय, ब्राह्मण भगवान के भक्त को परेशान नही करना चाहिए । दान, धर्म, नीति का पालन करना चाहिए । अहिंसा दया पारायण रहे । आचार, विचार, उच्चार शुद्ध रखना चाहिए।''

ईसी प्रकार कई उपदेश धर्मशास्त्रो के आधार पर सहजानंद स्वामीने किया था । सबका ध्यान बदल गया । शोक टल गया । सभीने उनकी पूजा किये । और कई प्रकार की भेट लोग उन्हे दिये थे । आज से सभी सहजानंद स्वामी को ''श्रीजी महाराज'' ऐसे नाम से सम्बोचन करने लगे । इसी दिन सहजानंद स्वामीने सभी को 'स्वामिनारायण' नाम का मंत्र दिये । और उनकी महिमा बताये ।

इस प्रकार चौदवे दिन से 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन कराये । 'रामकृष्ण गोविंद' के बदले 'स्वामिनारायण' का जाप प्रारम्भ करवाये ।

शीतलदास नामक एक सन्यासी भगवान की खोज में निकले ते । किसीने उससे कहा कि ''रामानंद स्वामी समर्थ सद्‌गुरु है । उनके पास जाओ । वे तुम्हे परमेश्वर की प्राप्ति करायेगे । वह धुमते-धुमते फणेणी आया । रामानंद स्वामी धाम में पधारे है । उसे ऐसा समाचार मिला तो वह हताश हो गया । वह वापस जाने के लिये प्रयास किया । महाराज ने कहा आज के दिन यही पर रुकजाओ । मैं तुझे रामानंद का दर्शन कराउगा । कल जाना हो तो चले जाना'' शीतलदास रुक गया ।

उसी दिन सहजानंद स्वामीने उससे स्वामिनारायण मंत्र के जाप करने को कहे । जिसका जप करते शीतलनाथ की समाधि हो गई । समाधि में अक्षरधाम का सुख प्राप्त हुआ । धाम में महाराज को सिंहासन पर बैठे देखे । रामानंद स्वामी उनकी वंदना करके खडे दिखे । रामानंद स्वामीने कहा ''इस सहजानंद स्वामी में सभी अवतार समाहित है । ये सर्वावतारी तथा सर्व के कारण हैं । उठकर शीतलदासने समाधि के अन्दर दर्शन हुए की बात बताये । वह महाराज के चरणो पर गिर पडे । बोले मुझे साधु बनाये । महाराजने उन्हे दीक्षा प्रदान की और उनका नाम''व्यापकानंद'' रखा ।

•

जल ही जीवन

– वीणाबेन नरेन्द्रभाई ठक्कर (बोपल)

आज का प्रश्न – पानी (Water)

सहारा के मरुस्थल में आप के पास हजारो टन सोना हो तो भी नही केवल एक बोतल पानी आप के जीवन को बचा सकता है। फिर भी हम सभी पृथ्वी को मरुस्थल में बदल रहे है। क्या पानी पृथ्वी पर से समाप्त हो रहा है ? नही पृथ्वी पर दस अरब जन संख्या हो तो भी पानी कम नही होगा। समस्या यह है कि भूगर्भ जल का प्रबन्ध अच्छे से नही रो रहा है। ४० वर्ष पहले कोई सोल भी नही था, कि पानी की बिक्री की जायेगी। अभी तो प्रत्येक २२ मार्च को ''वर्ल्ड वाटर डे'' मनाया जाता है।

सामान्यत : एक व्यक्ति एक दिन में २ से ४ लीटर पानी की आवश्यकता रखता है। क्यो आपने सोचा ? १ चालकेट तथा एक रोटी बनाने में कितना पानी लगता है ? जो वस्तु मनुष्य खाता है। उतना पानी भी खाता है। वह वास्तव में पानी नही खाता है। उसे 'वर्च्युअल वोटर' कहते है।

नमकीन समुद्र के जल को साधारण जल बनाना अधिक महँगा है। सब से अच्छा पानी बचाने की युक्ति है। खाने वाली वस्तु ही नही बल्कि जीन्स, कपडा, पेन्सिल, स्मार्ट फोन ये सभी प्राकृतिक पानी में मिलते है। तो कुछ औद्योगिक वाग्य, नगरपालिका का कचरा, जमीन में उतरने वाला पानी सैप्टिलटैंक से जलका Percolation जंतुनासक दवा जो पानी में धुलते है। गहराई में जाकर औऱ जहरीले हो जाते है। वह जहर खाद्य पदार्थ में आता है।

सर्वाधिक पानी का उपयोग खेती में किया जाता है। आज कल वैज्ञानिक रुप से टपक पद्धि से जल कम खर्च होता है। भूगर्भ जल को निकालने में बिजली का खर्च अधिक आता है। वस्ती विस्फोट के कारण जल का बचाव नही कर सकते है।

अपने प्रधानमंत्री वर्तमान समय–२०२४ में घर–घर नल द्वारा पानी देने की योजना बनाये है। प्रति व्यवित ४३ से ५५ लीटर पानी दिया जायेगा। इसके लिये राष्ट्रीय फंड बनाया जा रहा है। जिसे ''राष्ट्रीय जलजीवन कोष'' कहेगे। यदि मनुष्य पानी की बचत करेगा तो पानी मनुष्य को बचायेगा। इस लिये सोच समझकर पानी खर्च करना चाहिए। पानी के कमी होने पर कई समस्या ये जन्म लेगी। इसलिये **Save Water.**

धर्मकुल के पधरामणी के लिये हरिभक्तो को महत्वपूर्ण सचन

सभी हरिभक्तो को अवगत किया जा रहा है कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की सत्संग के किसी स्थल पर पधऱामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर प्रत्येक एकादशी, पूनम के दिन आये उसी दिन प्रसंग की तारीख कार्यक्रम के लिये साक्षात् मिलकर समय प्राप्त करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी पू. महाराजश्री के बंगले पर श्री स्वामिनारायण बाग पर नही जाना है। जिससे सभी लोग अवगत हो।

सम्पर्क : कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी – मो. : ९९०९९७६००९

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी के विषय में सूचन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये बहने कालुपुर मंदिर के हवेली में सांख्ययोगी बहनो से सम्पर्क करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर नही जाये। जिस पर सभी बहने ध्यान दे।

सत्संग समाचार

अहमबादा मंदिर श्री नरनारायणदेव का २०२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और श्री नरनारायणदेव पीठापति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से उसी प्रकार पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन मे फाल्गुन सुद-२/३ ता. १२-३-२०२४ के दिन अ.नि. प.भ. श्री नवीनचंद्र हरिप्रसाद पाठक (लंडन) परिवार यजमान पद से भरतखंड के अधिष्ठाता देव श्री नरनारायणदेव का २०२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव भव्य एवम् दिव्य रुप से मनाया गया।

पाटोत्सव के अर्न्तगत ता. १०-३-२०२४ से १२-३-२०२४ तीन दिन तक प्रातः काल सेसन में श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र के अर्न्तगत अहमदाबाद में श्रीहरि के लीलाचरित्रो की कथा विद्वान शा. स्वामी सुव्रतस्वरुपदासजी के वक्तापद से तथा अ.नि. जशुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट की याद में प.भ. डॉ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट(डेड्रोईट - यु.एस.ए.) यजमान पद पर की गयई । ता. ११-३-२०२४ को प्रातः ९ से शायं ५ बजे तक हरियाग यज्ञ किया गया था । ता. १२-३-२०२४ को प्रातः ठाकुरजी का प्रारम्भिक पूजन के बाद श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के कर कमलो द्वारा देव का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया । महाभिषेक के बाद श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के सानिध्य में प्रासंगिक सभा की गयी । हवेली में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री, प.पू. बड़े गादीवालाश्री तथा प.पू. श्रीराजा बिराजे थे । धर्मकुल पूजन, भेट आरती तथा कथा समापन की आरती के बाद धर्मकुल तथा वरिष्ठ संतो के हाथो से निम्नानुसार प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से तैयार नूतन प्रकाशन का विमोचन किया गया था।

(१) प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से और प.पू. बड़े महाराजश्री के मार्गदर्शन मेंआदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री रचित कीर्तन-संगीत के साथ रिकोर्डिंग करके आडियो रुप में पेन ड्राईव । (२) प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से बड़े उम्र वाले भी पढ सके ऐसे बड़े अक्षरो में लिखी शिक्षापत्री । (३) अहमदाबाद शहर में प्रसादीभूत स्थानो के नाम, पता तथा संक्षिप्त सूचना की पुस्तिका । (४) अहमदाबाद मंदिर की हेरिटेज आश्चर्यजनक गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी तीनो भाषाओ में सूचना पुस्तिका। (५) प.भ. जेठाभाई सवाणी (लंदन) द्वारा बनाये गये अहमदाबाद मंदिर और गादी स्थान के क्रिया कलाप, संस्थाओ का परिचय अंग्रेजी भाषा में पुस्तिका ।(६) प.भ. गोरधनभाई वी. सीतापरा द्वारा लिखी गई ''सत्संग सेतु'' पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति।

प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से युवकरो द्वारा तैयार किये **NND** तथा **APP** लांच की गयी थी । प.भ. धीजभाई राबडीया की और से प्रातः पूजा में रखने के लिये श्री नरनारायणदेव की मूर्ति तथा श्री नरनारायणष्टक काई जरुरत मंद हरिभक्तो को दिया गया था । मंदिर के हरिभक्तो का विरामस्थल तथा रसोई घर का पुर्नउद्धार का विडियो क्लिप दिखाई गयी थी । सोशियल मीडिया टीम के मार्गदर्शक कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी छ नये दीक्षित संत, यजमानश्री तथा फूलमंडल के सेवा भावी हरिभक्तो का यथोचित सम्मान किया गया था । पू. महंत स्वामी तथा धामो से आये विद्वान संत अवसरोचित प्रवचन के बाद श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपोने आशीर्वाद दिया था । सभा का संचालन पू. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) सुंदर रुप से किये थे।

सभा के बाद अन्नकूट की आरती उतारी गयी थी । प्रत्येक हरिभक्त के लिये महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी । (कोठारी शा. नारायणमुनिदासजी)

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव समक्ष आंगूर का उत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल की खुशी से अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन से गढपुर धाम के पू.स.गु. स्वामी श्रीज्ञानजीवनदासजी नासिक तपोधन ब्रह्मचर्य आश्रम की स्वामिनारायण मंदिर, शिष्य मंडल

की तरफ से ता. ७-३-२०२४ गुरुवार माघ वद-१२ के दिन श्री नरनारायणदेव के समक्ष भव्य अंगूर उत्सव पूर्ण किया गया। जिसका हजारो हरिभक्तोने दर्शन किये।

असारवा वीर हनुमानजी मंदिर सुंदरकांड

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के शुभ संकल्प से प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रस्थापित असारवा श्री वीर हनुमानजी के समक्ष धर्मकुल के सानिध्य में ता. ९-३-२०२४ शनिवार को शायं ५ से ७ बजे सुंदरकांड पाठ का श्री स्वामिनारायण वाडी असरावा में सुंदर आयोजन किया गया था। हजारो संत-हरिभक्त सुंदरकांड में भाग लिये थे। अंत में सभी लोग महाप्रसाद खाये थे। इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामीने सुंदर प्रबन्ध किया गया था।

अहमबादा मंदिर श्री नरनारायणदेव के समक्ष सुखे मेवे का अन्नकूट

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् अहमदाबाद मंदिर के पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा श्री नरनारायणदेव के समक्ष ता. १०-३-२०२४ रविवार के दिन भव्य सुखे मेवे का अन्नकूट किया गया था। जिसके यजमान प.भ. श्रेय किशोरभाई मेपाणी परिवारने लाभ उठाया था। प्रातः ८-१५ से शायं ६-३० तक शहर के हजारो हरिभक्तने दर्शन का लाभ लिये थे।

अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के समक्ष घेवर का अन्नकूट

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के खुशी से अहमदाबाद मंदिर के पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा श्री नरनारायणदेव के समक्ष ता. २८-३-२०२४ गुरुवार के दिन भव्य धेवर का अन्नकूट किया गया था। जिसमें यजमान परिवार हरिॐ परिवारने लाभ लिया था। शहर के हजारो हरिभक्तोनेद र्शनकाल ाभ उठाया था। (कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में फाल्गुन सुद-१५ की सत्संग सभा फूलदोलोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा परमपूज्य लालजी महाराजश्री शुभ सानिध्य में अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रसादी के सभा मंडप में हर पूनम को आयोजित सत्संग सभा ता. २५-०३-२०२४ को प्रातः ८-३० से ११ बजे तक पूज .स.गु. शा. स्वामी सुव्रतस्वरुपदासजी के वक्तापदे से हुई। हजारो हरिभक्त कथा का श्रवण किये थे। कलोल मंदिर के महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी ने भक्तो को लाभ दिया था। आज की सभा के यजमान अ.नि. ईश्वरभाई शंकरभाई भूलाभाई पटेल, अ.नि. विक्रमभाई ईश्वरभाई पटेल, निकश, प्रिशा, जेलिन (रामदासबापा परिवार - उनावा) सभा का सुंदर संचालन स.गु. कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजीने किया था। (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव

आज उतरा फाल्गुनी नक्षत्र होने के कारण श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव ता. २५-०३-२०२४ सोमवार दोपहर को १२ बजे श्री नरनारायणदेव के समक्ष श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल द्वारा भव्य ओच्छव के मध्य प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणधेव के जन्म जयंती की आरती उतारकर गुलाल रंग को हजारो हरिभक्तो के उपर छिडके थे। अच्छे सुंदर मंडप में श्वेतवस्त्र, साँफा बांधकर प.पू. लालजी महाराजश्री शहर और गाँव से आये लाखो हरिभक्तो को दर्शन दिये तथा रंगोत्सव का आनंद आया।

श्री नरनारायणदेव की कृपा से और धर्मकुल के प्रतिनिष्ठा का दर्शन आज दिखाई दिया था। 'न भूतो न भविष्यति' जैसा था। अलौकिक फूलदोलोत्सव का दर्शन मिला। आज के इस अवसर के लिये शब्द कम पड जाये ऐसा है। फूलदोलोत्सव के यजमान अ.नि. रमणभाई शंकरभाई भूलाभाई पटेल, संजयभाई रमणभाई पटेल, आदर्श - रामदास बापा परिवार (उनावा) (कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड (गाँधीनगर) दशाब्दी-महोत्सव

परमकृपालु आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के पुनीत पर्दाविंद से पवित्र हुए । साबरगंगा के प्रागंण में अहमदाबाद और गांधीनगर के मध्य में स्थित सुघड गाँव में परमकृपालु आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से तथा धर्मकुल के खुशी से अ.नि. पूज्य शास्त्री स्वामी श्री हरिकेशवदासजी के संकल्प और प्रेरणा से तथा भावनाशील भक्तगण के तन, मन, धन के सहयोग से बन रहे श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत सुघड श्री स्वामिनारायण मंदिर के दश वर्ष पूर्ण होने पर दशाब्दी महोत्सव पू. शास्त्री स्वामी श्री हरिप्रियदासजी की प्रेरणा से ता. १५-०३-२०२४ फाल्गुन सुद-६ शुक्रवार से १७-०३-२०२४, फाल्गुन सुद-८ रविवार तक उल्लास पूर्वक मनाया गया । दशाब्दी पाटोत्सव के यजमान श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखड की महिला मंडल सद्भाव दिखाकर उत्सव को यादगार बनायी थी ।

ता. १५, शुक्रवार दोपहर नगरयात्रा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । ता. १६ शनिवार अधिक भाव पूर्वक होमात्मक महापूजा यज्ञ का आयोजन का प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुपा गादीवालाश्री आयी थी । वह बहनो को आशीर्वाद का लाभ दी ।

शुक्रवार और शनिवार दोनो दिन रात्रि में पू. शास्त्री स्वामी हरिप्रियदासजी सत्संग व्याखान का लाभ दिये थे । गांधीनगर के बच्चो एवम् युवकोने कीर्तन, वचनामृत, रास एवम रुपको द्वारा सत्संग में ज्ञान वर्धन किये थे ।

ता. १७ रविवार प्रातः ठाकुरजी को केसर जल से वेदमंत्रो के साथ अभिषेक किया गया था । अन्नकूट रखा गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आकर अन्नकूट की आरती उतारे थे । इस अवसर पर आये संतो को आशीर्वाद दिये थे । पूज्यपाद महाराजश्री सभा में आनेवाली नई पीढी के सुंदर भविष्य हेतु ऐसी समैया सत्संग के प्रति सजग रहे बताये थे। तथा आशीर्वाद भी दिये थे । अच्छे प्रबन्ध के लिये पू. हरिप्रियदासजी स्वामी पर खुशी व्यक्त किये थे । सुघड गाँव की सुंदर दशाब्दी महोत्सव एक उदाहरण बने । (कोठारी श्री सुघड मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (भूंडिया) ६ठा वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर समस्त सत्संग समाज धरमपुर (भूंडीया) ने प्रबन्ध किया था । ता. ३-३-२०२४ से ता. ५-३-२०२४ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (भूंडिया) का ६वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित धीरजाख्यान ग्रंथ की त्रिदिनात्मक पारायण पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्री सत्यसंकल्पदासजी (कोटेश्वर) वक्ता पद से किये थे । इस अवसर पर ता. ५-३-२०२४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । मंदिर में ठाकुरजी की आरती पोथीयात्रा, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि हुआ था । पूर्णाहुति के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर से पूज्य महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । पूरे सभा का संचालन पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी ने अच्छे से किया था । गाँव के सभी हरिभक्त अच्छी सेवा दिये थे ।(कोठारीश्री धरमपुर - भूंडिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) राणीप रजत जयंती महोत्सव भाईयो के मंदिर में ३९ वाँ पाटोत्सव एवम् विदुर निति पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के स्नेह से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण समस्त सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राणीप के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप (बहनोका) रजत जयंती महोत्सव और भाईयो के मंदिर का ३९ वाँ पाटोत्सव तथा उसके उपलक्ष्य में श्रीमद् विदुरनीति पंचान्ह पारायण ता. १४ मार्च से १८ मार्च तक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता पूज्य सद्. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) वक्ता पद से हजारो कथा प्रेमीजन कथा सुनकर धन्य हुए थे ।

ता. १९-३-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और सभी बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. गादीवालाश्री दोनो मंदिर में ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में सभी भक्तो को प.पू. गादीवालाश्रीने बहनो को आशीर्वाद दी थी । कथा के मध्य आने वाले उत्सवो को उल्लास पूर्वक मनाया गया था । अधिक संख्या में संत पधारे थे । पूरी अवसर सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर महंतश्री) अच्छे से किये थे । पूरे उत्सव में हरिभक्तोने तन, मन एवम् धन से पूर्ण सेवा दिये थे । (शा.स्वा. व्रजभूषणदासजी - महंतश्री गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा का वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के स्नेह से यहाँ सापावाडा मंदिर के महंत स्वामी अनिरुद्धदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा का ६८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव माध वद-८ ता. ४-३-२०२४ को उल्लासपूर्वक मनाया गया था ।

बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), पू. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (पोरडा), स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (लालोडा) आदि संतो के करकमलो द्वारा किया गया । इसके पश्चात ठाकुरजी की श्रृंगार-अन्नकूट आरती की गई ।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. प्रवीणभाई अमीचंदभाई पटेल परिवार था । संत आशीर्वाद दिये थे । धामो-धाम से संत आये हुए थे । गाँव का प्रत्येक हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा देकर श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये थे । (ईश्वरभाई पटेल - केशीयर श्री कालुपुर मंदिर)

श्रीहरि चरणो से प्रसादीभूत मोटेरा मंदिर का ३४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी और मोटेरा सत्संग समाज (गांधीनगर) के अच्छे प्रबन्ध से तथा प.भ. नरेन्द्रभाई जीवाभाई पटेल, सरोजबेन नरेन्द्रभाई पटेल यजमान थे . ३४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १३-३-२०२४ से ता. १५-३-२०२४ तक मनाया गया था ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्री विदुरनीति विवेचन त्रिदिनात्मक रात्रीय पारायण स.गु. शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । ता. १५-३-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके करकमलो द्वारा ठाकुरजी का ३४ वाँ पाटोत्सव की अन्नकूट आरती हुई । इसके बाद सभी हरिभको को सभा में आशीर्वाद दिये । (महंत शा. स्वा. व्रजभूषणदासजी - गांधीनगर)

मूली प्रदेश के समाचार

श्री स्वामिनारायण प्रसादी मंदिर (पुराना टावरवाला) हलवद वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के स्नेह से स.गु. पूजारी स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा सत्संगी हरिभक्त के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण प्रसादी मंदिर हलवद का १८ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर ता. १२-३-२४ से ता. १६-३-२०२४ तक श्रीमद् सत्संगी भूषण पंचान्ह पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद से हुई थी । १६-३-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी आदि संत पार्षद मंडल के साथ आये थे । और निज मंदिर में ठाकुरजी का अन्नकूट आरती उतारकर सभा में हरिभक्तो को दिशा सूचन दिये । पाटोत्सव के मुख्य यजमान सोनी घनश्यामलाल छगनलाल परिवार थे । सभा का संचालन स्वा. विश्वविहारीदासजीने किये थे ।

इस अवसर पर हरिभक्त छोटी-बड़ी सेवा दिये थे । धामो धाम से सांख्ययोगी माताये बडी संख्या में आये थे । (प्रतिश्री अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) हलवद मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और सभी

बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सगु. श्रीजीस्वरुपदासजी स्वामी तथा सत्संग समाज हलवद के अच्छे प्रबन्ध से ता. २४-३-२४ से ३०-३-२४ तक नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव धर्मकुल के स्नेह एवम् स्वामिनारायण मंदिर (नया) भाईयो का १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. २४-३-२४ से ता. ३०-३-२४ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाधासजी (चारडवा) तथा सगु. शा. व्रजवल्लभदाजी (ट्रस्टीश्री मूली) के वक्ता पद से की गयी थी।

ता. ३०-२-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये बहनो के मंदिर ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव विधिव्रत रुप से पूर्ण किया गया। तथा भाईयो के मंदिर की आरती भी उतारे। समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री भी पधारे थे। बहनो को आशीर्वाद देकर खुश हुई। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हलवद प्रान्त के सभी हरिभक्तो से खुश होकर आशीर्वाद दिये। पूरे अवसर पर कई हरिभक्तोने सेवा दिये थे। धामो-धाम से संत सांख्ययोगी बहने अधिक संख्या में पधारे थे। (कोठारीश्री हलवद - बहनो का मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नटवरगढ विशाब्दी महोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वादात्मक आज्ञा से एवम् पुरे धर्मकुल के स्नमेह से पू. स.गु. स्वा. उत्तमप्रियादसजी (सुरेन्द्रनगर) तथा हजूरी पार्षद श्री महादेव भगत गुरु हजूरी पार्षद महोबतसिंह भगत की प्रेरणा से नटवरगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर के ठाकुरजी का विशाब्दी महोत्सव और उसके उपलक्ष्य में आयोजित श्रीमद् भागवत पंचदिनात्मक पारायण स.गु. शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी (सुरेन्द्रनगर मंदिर महंतश्री) तथा स.गु. साधु सत्संगसागरदासजी (मूली) के वक्ता पद से ता. २८-३-२४ से १-४-२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

ता. १-४-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी पधारे थे। उनके करकमलो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारी गयी। इसके बाद सभा में सभी संत हरिभक्त को आशीर्वाद दिये थे। सभा का सुंदर संचालन स.गु. शा. स्वा. विश्ववल्लभदासजीने सुनाया था।

इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली, सुरेन्द्रनगर, जेतलपुर, असारवा, टोरडा, अंजली आदि तीर्थो से संत एवम् हरिभक्त ने तन, मन, धन से अच्छी सेवा दिये थे। (कोठारीश्री नटवरगढ मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा ४८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नीलकंठदासजी (चराडवा) तथा चराडवा सत्संग समाज के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा धाम का १३९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ८-३-२०२४ माघ वद-१३ से फाल्गुन सुद-२ ता. १२-३-२०२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया था। इस अवसर के उपलक्ष्य पर स.गु. शास्त्री स्वामी श्री व्रजवल्लभदासजी (ट्रस्टीश्री मूली), स.गु. शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी स्वामी (मूली) के वक्ता पद से श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण उल्लासपूर्वक मनाया गया था। ता. ११-३-२०२४ फाल्गुन सुद-२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का पाटोत्सव अच्छे रुप से पूर्ण किया गया। इस अवसर पर संहितापाठ के वक्ताश्री स.गु. हरिवल्लभदासजी स्वामी (चराडवा) विराजमान थे।

महोत्सव के मार्गदर्शक स.गु. स्वामी श्रीजीस्वरुपदासजी हलवद, पू. स.गु. स्वामी श्री कृष्णवल्लभदासजी (मूली) थे। सभा का संचालन यहां के मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठ स्वामीने शोभित किया था। (कोठारी स्वामी - चराडवा)

मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर
संपर्क : महंत स्वामी : ९७२६९ ९७२१०

अक्षरवास

धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. स्वामी कपिलमुनिदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (उ. ६२ वर्ष) ता. ०६-०३-२०२४ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए थे।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

महा सुद-१ नारण पालजी पाधरा (सुखपर-कच्छ), प.भ. रसिकभाई परीख (अहमदाबाद), प.भ. रमीलाबेन विनोदचंद्र पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद) । **महा सुद-२** प.भ. मधुबेन रमणभाई पटेल (झुलासण), प.भ.अ.नि. चतुरभाई गेलाभाई पटेल (गवाडा), प.भ. शिवाभाई मोतीभाई पटेल (खेरोल), प.भ. भोलीदास मोतीदास पटेल (झुलासण), प.भ. अर्जुन चिंतनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हितेशभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जीतभाई पूजारा (अहमदाबाद) । **महा सुद-३** प.भ. बिन्दीया किरीटभाई काछडीया (बीलीमोरा), प.भ. दशरथभाई सोमाभाई पटेल (कलोल), प.भ. सूर्याबेन जीतेन्द्रभाई (अहमदाबाद) । **महा सुद-४** कुमारी ईच्छाबेन अभयभाई पटेल (अहमदाबाद) । **महा सुद-५** प.भ.अ.नि. मावजीभाई हिरजीभाई हिराणी (कोडकी-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई बी. व्यास (धोलेरा), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जीतेश शामजीना स्मरणार्थे (अहमदाबाद) । **महा सुद-६** प.भ. शामजी लालजी लाखाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. राधाबेन प्रेमजी वेकरीया (मांडवी-नागलपुर-कच्छ) । **महा सुद-७** प.भ. प्रेमजी लक्ष्मण हालाई (सुखपर-कच्छ) । **महा सुद-८** प.भ.अ.नि. धनबाई लालजी भूवा (सुखपर-कच्छ), प.भ. करशन कानजी भूडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. बालुभाई शंभुभाई सावलीया (पीठवडी) । **महा सुद-९** प.भ. श्रेया किशोरभाई मेपाणी (कच्छ-भुज), प.भ. पूर्व भावेशभाई गोहिल (अहमदाबाद), प.भ. महेन्द्रभाई बेचरदास पटेल (मोटेरा), प.भ. रविन्द्रकुमार शनाभाई सोलंकी (गांधीनगर), प.भ. नटवरभाई गोविंदभाई पटेल (देउसणा), प.भ. रमणलाल मरधाभाई पटेल (घमासणा), प.भ. पटेल एस. उमेदराम (अहमदाबाद), प.भ. सुमित मावजी हिराणी (फोटडी-कच्छ) । **महा सुद-११** प.भ.अ.नि. कुंवरजी हिरजी वरसाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. राजेन्द्र ए. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. लक्ष्मण रूडा खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. नविनचंद्र गोविंदलाल पटेल (मोखासण), प.भ. अमीष रमेशचंद्र ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद) । **महा सुद-११** श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (बोटाद), प.भ. लतेशभाई मणीलाल शुक्ला (अहमदाबाद) । **महा सुद-१३** प.भ. बीनाबेन एस. भावसार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. नगीनदास रामदास पटेल (कुंडाल), प.भ. रामबेन भीखा गोरसीया (सुखपर-कच्छ), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. हेमलताबेन हरिकृष्णभाई पटेल (पालज), गीताबेन डी. पटेल (पुंधरा), प.भ. मौलिक प्रफुलभाई पटेल (भरूच), मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. धीरजभाई (भुज-कच्छ), प.भ.अ.नि. रवजी हरजी राबडीया (वाडासर-कच्छ) । **महा सुद-१३** प.भ. परसोत्तमभाई अमरशीभाई सवाणी (अहमदाबाद), प.भ. वालबाई परबत वेकरीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. अवेध सुरेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भारतीबेन अर्जुनभाई पटोलीया (अहमदाबाद) । **महा सुद-१४** प.भ. मंगुबेन कांतिलाल पटेल (नारदीपुर), प.भ. चिराग महेता (अहमदाबाद) । **महा सुद-१५** प.भ. निमेष प्रकाशभाई जादव (विरमगाम), प.भ. कौशल अश्विनभाई सोनी (बोपल), प.भ. कांतिलाल ईश्वरलाल दलवाडी (विरमगाम), प.भ. कांतिलाल अंबालाल पटेल (माणसा), प.भ. विनयभाई विभाकर (पदयात्री) ।

महा वद-१ श्रीजी होस्पिटल डॉ. अश्विनभाई (अहमदाबाद), प.भ. विराज अमृतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सवितबेन भरतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चिमनलाल गांडालाल ठक्कर (राणेसर), प.भ. दिनेशभाई एस. पटेल (गांधीनगर से-२३) । **महा वद-२** प.भ. तेजेन्द्रकुमार सुभाषचंद्र भावसार, प.भ. मयुर विनुभाई पटेल (नरोडा), श्रीहरि प्रसन्नार्थे, प.भ. विवेक विजयकुमार सोनी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कानजीभाई नारणभाई राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. रवजी रामजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनीषभाई जीतुभाई चोकसी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. वेलबाई मावजी भंडेरी (सुखपर-कच्छ), प.भ. रसिकभाई फुलाभाई पटेल (कपडवंज) । **महा वद-३** प.भ. निधि दिनेशभाई ठुम्मर (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदभाई लालभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरिकृष्ण कपीलभाई गजेरा (अहमदाबाद), प.भ. मुकुन्दभाई मोनीलभाई पटेल (वडोदरा) । **महा वद-४** अ.नि. स.गु. शा. स्वा. घनश्यामस्वरूपदासजी (अहमदाबाद) । **महा वद-५** प.भ. जीगर कांतिभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निर्मलाबेन कानजीभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. विष्णुभाई परसोतमदास पटेल (करजीसण), प.भ. दिव्यम जयंतीलाल पटेल (अहमदाबाद) । **महा वद-६** प.भ.अ.नि. कैलासबेन जगदीशचंद्र मोदी (अहमदाबाद), प.भ. अलकाबेन जनकभाई पटेल (अहमदाबाद) । **महा वद-७** प.भ. प्रेमजीभाई खीमजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. अमृतभाई नाथालाल पटेल (ईटादरा), प.भ. भूमिलभाई अमृतभाई पटेल (ईटादरा), प.भ. कनुभाई महादेवभाई पटेल (कल्याणपुरा), प.भ.अ.नि. रेखाबेन विष्णुभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. रेणुकाबेन मणीलाल पटेल, प.भ. लीलाबेन नारणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कपीलाबेन मधुभाई मांगरोलीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कौशिक वालजी गांगजीयाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. महेन्द्रभाई डी. पटेल (गवाडा), प.भ. सिध्धार्थ चंपकभाई ठक्कर, प.भ. जतीन रवजीभाई केराई (झुंडाल), प.भ. रमीलाबेन दशरथभाई पारेख (गामडी), प.भ. हरेशभाई सांकेश्वरभाई शुक्ल (सिध्धपुर), प.भ. जे. के. सिनाराणा (अहमदाबाद), प.भ. देवराजभाई हरजीभाई विराणी (रणीयाला), प.भ. निरव - तरूण अश्विनभाई गज्जर (अहमदाबाद) । **महा वद-८** प.भ. जीनल महेशभाई पटेल (अडालज), प.भ. प्रियंकाबेन खुशाल वेकरीया (मिरजापर-कच्छ), प.भ. प्रविणभाई सोमाभाई पटेल अ.नि. कांताबेनना स्मरणार्थे (गांधीनगर), प.भ. प्रविणभाई सोमाभाई पटेल अ.नि. कांताबेनना स्मरणार्थे (गांधीनगर), प.भ. बलदेवभाई किशोरदास पटेल (करजीसण) । **महा वद-९/१०** प.भ. मूलजी लालजी वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. सुधाबेन कनैयालाल चौहाण (चांदखेडा), प.भ. राहुल महेन्द्रभाई हेमारीया (अहमदाबाद) । **महा वद-११** प.भ.अ.नि. मनजी मावजी भंडेरी (वेकरा-कच्छ) । **महा वद-१२/१३** प.भ.अ.नि. प्रेमबाई गोपाल हिराणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ) । **महा वद-१४** प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. परेशभाई परसोतमभाई तथा ललीताबेन (वडताल), लीलानंद मेग्नेसियम - ह. प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. अंकिताबेन मितलभाई पटेल (हिंमतनगर), प.भ. मुकेशभाई हिराभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सिध्धराजसिंह दिलीपसिंह झाला (सुरेन्द्रनगर) । **महा वद-३०** प.भ.अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. भास्करभाई ब्रह्मभट्ट, प.भ. माधवलाल मगनलाल पटेल (न्यु राणीप), प.भ. हर्ष कनैयालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. केतनभाई अमृतभाई पटेल (वेडा), प.भ. सोनलबेन अक्षयभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. कृपा भावेश भूडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. केसरा प्रेमजी हालाई (कोडकी-कच्छ), प.भ. योजश दिपककुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हसमुखभाई टी. पटेल (अहमदाबाद) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

प.पू.अ.सौ. गादीवाला के संकल्प से असारवा वाडी में आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित वीर हनुमानजी महाराज के समक्ष सुंदरकांड पाठ श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के सानिध्य में संपन्न हुआ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के १३ वें वार्षिकोत्सव पर समूह महापूजा की आरती उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री साथ में यजमान परिवार ।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में 'वर्ल्ड ब्राह्मण आर्गेनाईजेशन' का सम्मेलन प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में संपन्न हुआ ।

सुघड मंदिर का दशाब्दी महोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के २०२ पाटोत्सव
तथा पाटोत्सव के उपलक्ष्य में संत महादीक्षा देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री